# साहित्य अकादेमी पुरस्कार

# Sahitya Akademi Awards

# 2015

असमिया में पुरस्कृत

## कुल सैकिया

(जन्म : 1959)

कुल सैकिया सिद्ध असमिया कथाकार हैं। आपका कहानी–लेखन यदा–कदा जादुई यथार्थवाद के स्पर्श के साथ कहानी कहने की उत्तर–आधुनिक कला से प्रभावित है। आपकी कहानियों के विषय विशिष्ट हैं, जो वर्तमान समाज के मानवीय भावों, संबंधों, आशाओं एवं आकांक्षाओं से सरोकार रखते हैं। आपने सुंदर आख्यान प्रस्तुत करने के लिए अद्वितीय क्षमता के साथ पात्रों के जटिल मानसिक संसार में गहरे उतरकर एक अनुभवी कथाकार के रूप में अपनी कुशाग्रता सिद्ध की है।

कुल सैकिया का जन्म 1959 में असम के कामरूप ज़िला स्थित रंगिया गाँव में हुआ। आपने दिल्ली स्कूल आफ़ॅ इकोनॉमिक्स से अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर तथा गौहाटी विश्वविद्यालय से एल.एल.बी. की उपाधियाँ प्राप्त कीं। आपने अपने कार्य–जीवन का आरंभ दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदू कॉलेज में व्याख्याता के पद से किया। संप्रति, आप अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक, असम के पद पर कार्यरत हैं। आपको अंग्रेज़ी और हिंदी भाषाओं का भी ज्ञान है। आपने विद्यार्थी जीवन में लेखन आरंभ किया तथा आपके साहित्य पर असमिया लेखक सौरभ चालिहा एवं एडलस हक्सले का प्रभाव है। आपकी प्रकाशित कृतियों में *तीर्थ देकार निरुद्देशर पिसोर सुआ, ग्रहांतर, गल्पर आरार मानूह, बेली फूलोर छबि, एक डज़न गल्प, माथो गल्प, पराई मानूह, निर्बाचित गल्प, ब्रेकिंग न्यूज़* (समस्त कहानी–संग्रह) तथा *निर्जन दिपोत एदिन* (उपन्यास) शामिल हैं। आपके उपन्यास का हिंदी अनुवाद *वो 24 घंटे* के नाम से प्रकाशित है तथा आपकी कहानियों पर आधारित 'भोज' और 'वृत्त' नामक दो टेलीफ़िल्मों का निर्माण दूरदर्शन द्वारा किया गया है। आपकी पुस्तक *आखरात मोई आरु अन्यान्य* को मुनिन बरकतकी पुरस्कार तथा आपकी कहानी 'आवर्त' को कथा पुरस्कार प्राप्त हैं।

पुरस्कृत कृति *आकाशर छबि आरु अन्यान्य गल्प* कुल सैकिया कृत तेरह असमिया कहानियों का संग्रह है। प्रत्येक कहानी की विषयवस्तु अनूठी है। कहानियों की भाषा पात्रों की मानसिकता और परिस्थितियों के अनुकूल है। प्रत्येक कहानी ऐसे रची गई है कि वह पाठकों के मन और मस्तिष्क दोनों को संतुष्ट करती है। यही इस पुस्तक की सफलता का राज़ है। यह कृति असमिया में लिखित भारतीय कथा साहित्य को एक महत्त्वपूर्ण योगदान मानी गई है।

परिवार के साथ

Award in Assamese to
**Kula Saikia**
(Born in 1959)

Kula Saikia is an accomplished story-teller of Assamese Language. His fiction writing has been influenced by post-modernist style of story–telling with an occasional touch of magic-realism. His stories have distinctive themes dealing with human emotions, relationships and the hopes and aspirations of the present day society. He has proved his acumen as a seasoned story teller who delves deep into the complex mental universe of his characters with a unique ability to present beautiful narratives.

He was born in 1959 in Assam. He holds a Master's Degree in Economics from the Delhi School of Economics and an LLB from the Gauhati University. He has also been the recipient of the prestigious Fulbright scholarship. He started his career as a lecturer at Hindu College, Delhi University and thereafter joined Public Service. He is presently serving as the Additional Director General of Police in Assam. Apart from Assamese, the languages known to him are English and Hindi. He began writing as a student and his literary influences have been Assamese writer Saurav Chaliha and Alduos Huxley. His novel was translated into Hindi as *Woh 24 Ghante* and two telefilms based on his stories were produced by Doordarshan, namely, "Bhoj" and "Britta". His book *Akhrat Moi Aru Anyanya* was awarded the Munin Borkataki Award for Best Book. His short story "Avarta" won the Katha award.

Kula Saikia's awarded book, *Akashar Chhabi Aru Anyanya Galpa*, is a collection of 13 short stories, each having a unique theme. Notably, the language used is befitting to the situation and the psyche of the characters. Each and every story of the book is woven in such a way that it satisfies both the head and heart of the readers. And there lies the success of the book. As such, *Akashar Chhabi Aru Anyanya Galpa* is considered as an important contribution to the genre of Indian short stories in Assamese.

**At The Goa Arts & Literature Festival, December 2015**

बाङ्ला में पुरस्कृत

## आलोक सरकार

(जन्म : 1933)

आलोक सरकार बाङ्ला के एक विशिष्ट कवि, कथाकार और नाटककार हैं। कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, आत्मकथा आदि विधाओं में आपकी पचास से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं। आपकी रचनाएँ सांस्कृतिक एवं भाषिक परंपराओं पर आधारित हैं तथा स्थानीयता से गहरे तौर पर जुड़ी हुई हैं। 'अनुपस्थित' और 'शून्य' आपकी विचार–प्रक्रिया और काव्य–रचना के अनिवार्य तत्त्व के रूप में नज़र आते हैं।

आलोक सरकार का जन्म 1933 में पश्चिम बंगाल के कालीघाट, कोलकाता में हुआ। आपने कोलकाता विश्वविद्यालय से बाङ्ला साहित्य में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की है। आपको संस्कृत एवं अंग्रेज़ी भाषाओं का भी ज्ञान है। आप बाङ्ला साहित्य के रीडर के पद से श्यामसुंदर कॉलेज, वर्धमान से 2005 में सेवानिवृत्त हुए। आपका पहला कविता–संग्रह *उतल निर्जन* 1950 में प्रकाशित हुआ था। आपकी उल्लेखनीय कृतियों में *आलोकित समन्वय, अंधकार उत्सव* तथा *विशुद्ध अरण्य* नामक कविता–संग्रह; *एकटि बारीर गल्प, पुष्प पर्ण* एवं *एकजन नामक उपन्यास; अस्वत्थ गाछ, मायाकाननेर फुल* एवं *सेई घर* नामक काव्यनाटक; *अंतर्लोक* एवं *बाइरे अंतरे* नामक निबंध–संग्रह तथा *जलानिकाठ ज्वलो* एवं *आमार कविता जीवन* नामक आत्मकथाएँ शामिल हैं। आपने कालिदास कृत *कुमारसंभव* तथा कुछ प्रतिनिधि यूरोपियन कवियों की कविताओं का बाङ्ला अनुवाद भी किया है, जो *द्वितीय मुकुर* नाम से प्रकाशित है। आपका *काव्यसमग्र* (चार खंडों में) तथा *काव्यनाटक समग्र* भी प्रकाशित हैं। आपको पश्चिम बंगाल सरकार का सर्वोच्च साहित्य सम्मान रवींद्र पुरस्कार तथा टैगोर साहित्य पुरस्कार भी प्राप्त हैं।

पुरस्कृत कृति *शोनो जवाफुल* आलोक सरकार की बाङ्ला कविताओं का संग्रह है। ये कविताएँ विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होकर पाठकों के बीच काफ़ी लोकप्रिय हैं। इस संग्रह में कवि ने अपनी पूर्ववर्ती काव्यधारा से भिन्न मिज़ाज की कविताएँ रची हैं। कवि की स्वानुभूतियों से प्रेरित ये कविताएँ सरल, सहज भाषा में गहन आंतरिक आनंद की कविताएँ हैं। यह कृति बाङ्ला में लिखित भारतीय काव्य को एक महत्त्वपूर्ण योगदान मानी गई है।

परिवार के साथ

Award in Bengali to
**Alok Sarkar**
(Born in 1933)

Alok Sarkar is a celebrated Bengali poet, fiction writer and playwright. His writing is founded on cultural and linguistic traditions that are deeply vernacular. 'Absence' and 'Nought' are the most imperative constituents of his entire thought process and poetry.

Alok Sarkar was born in 1933 in Kalighat, Calcutta, West Bengal. He holds a Master's degree in Bengali language and literature from Calcutta University. Apart from Bengali, the languages known to him are Sanskrit and English. He retired as a Reader in Bengali from Shyam Sunder College, Wardhman in 2005. His first book of poetry, *Utan Nirjan* was published in 1950. His work includes more than two and a half dozen poetry collections, 13 plays and several volumes of novel, essays, autobiography etc. Some of his significant works are *Aalokit Samanvay, Andhkar Utsav, Vishuddh Aranya* (Poetry collections); *Ek Ti Barir Galpo, Pushp Parana, Ekjan* (Novels); *Aswaatth Gachh, Maya Kananer Phul, Seighar* (Plays); *Antarlok, Biari Antraya* (Essays) *and Jalani Kaath, Aamar Kavita Jeevan* (Autobiography). He has translated some European poets in Bengali titled, *Dwitia Mukur* and Kalidasa's *Kumarasambhav* from Sanskrit. He is the recipient of Rabindra Puraskar, the highest literary honour of West Bengal government and Tagore Literature Award.

His awarded book, *Shono Jabaphool,* is a collection of poetry. Many of the poems of this collection have already gained popularity among readers, after their publication in different magazines. Through this collection the poet has broken his earlier poetic mould and crafted poetry of different moods. These poems are lucid and simple which derive from the poet's experience and give the reader a profound inner pleasure. As such, *Shono Jabaphool* is considered as a major contribution to the genre of Indian poetry in Bengali.

**Lighting Lamp in a Literary Programme in West Bengal**

बोडो में पुरस्कृत

**ब्रजेन्द्र कुमार ब्रह्म**

(जन्म : 1943)

ब्रजेन्द्र कुमार ब्रह्म बोडो भाषा के विख्यात कवि, आलोचक तथा निबंधकार हैं। बोडो साहित्य में आपका योगदान अत्यधिक विस्तृत है तथा 1975 में आपके काव्य–संग्रह *ओखरंग गोड़से नङगोउ* के प्रकाशन के साथ ही आपको बोडो साहित्य में प्रतीकात्मक कविता को स्थापित करने का श्रेय प्राप्त है। आप बोडो में 'प्रति–कविता' के पुरोधा हैं, जिन्हें *बायदिं देखो बायदि गाब* में पढ़ा जा सकता है। ये कविताएँ गद्य शैली की तकनीकों का प्रयोग करते हुए रची गई हैं।

ब्रजेन्द्र कुमार ब्रह्म का जन्म 1943 में असम के कोकराझार ज़िले में हुआ। आपने सेंट एडमंड कॉलेज, शिलांग से कला स्नातक की उपाधि प्राप्त की। आपको असमिया, बाङ्ला तथा अंग्रेज़ी भाषाओं का भी ज्ञान है। आपने अपने कार्य–जीवन की शुरुआत 1970 में बनरगाँव हाई स्कूल में हेडमास्टर के पद से की तथा सन् 2001 में आप सेवानिवृत्त हुए। आप कुछ प्रारंभिक बोडो पत्रिकाओं के प्रधान संपादक भी रहे हैं। आपने 1973 से लेखन प्रारंभ किया। आपकी प्रकाशित कृतियों में *थुंलइ आरो संसरी* (1986), *राइथाइमाला* (1992) एवं *नोजोर आरो सोरजी* (1994) नामक निबंध–संग्रह तथा *आङ् फोइफिङ्गोन* (1994) नामक कविता–संग्रह शामिल हैं। आपको बोडो साहित्य सभा द्वारा सोमेश्वरी ब्रह्म पुरस्कार (1994), टैगोर साहित्य पुरस्कार (2009) तथा बोडो साहित्य सभा द्वारा प्रवण बरगयारी पुरस्कार (2013) से सम्मानित किया जा चुका है।

पुरस्कृत कृति *बायदि देंखो बायदि गाब* ब्रजेन्द्र कुमार ब्रह्म कृत बोडो कविता–संग्रह है। आपकी कविताएँ विभिन्न विषय वस्तुओं पर आधारित हैं, जो विचारों को जागृत करती हैं, जिनमें वनों की कटाई के कारण उत्पन्न पारिस्थितिकी असंतुलन, इस संसार में मनुष्य के मनुष्य बने रहने की प्रार्थना, प्रजातंत्र, भूमंडलीकरण, समानता, प्रेम आदि भाव शामिल हैं। अपनी रचनाओं के माध्यम से आपने आशा, आकांक्षा और सरोकारों के संप्रेषण द्वारा बोडो समाज की अमूल्य सेवा की है। यह कृति बोडो में लिखित भारतीय काव्य को एक महत्त्वपूर्ण योगदान मानी गई है।

परिवार के साथ

Award in Bodo to
**Brajendra Kumar Brahma**
(Born in 1943)

Brajendra Kumar Brahma is a noted poet, critic and essayist of the Bodo language. His contribution to Bodo literature has been immense and he is credited with having established symbolic poetry in Bodo literature in 1975, with the publication of his book of poems titled *Okhrang Gongse Nanggou*. He is also the pioneer of 'Anti-poems' in Bodo which can be read in *Baidi Dengkhw Baidi Gab* using the style of prose-like techniques.

He was born in the year 1943 in Kokrajhar district. He holds a B.A. Degree from St. Edmund's College, Shillong. The languages known to him are Assamese, Bengali and English. He started his career as the Headmaster of Banargaon High School in 1970 and retired in 2001. He has also been the Chief Editor of a few erstwhile Bodo magazines. He is the recipient of several Awards including Someswari Brahma Award (1994), Tagore Literature Award (2009) and Prabon Bargayari Literature Award (2013) among others.

His awarded book, *Baidi Dengkhw Baidi Gab* is a book of poetry dwelling on varied themes which are thought-provoking ranging from the ecological imbalance due to deforestation, a prayer to the human being to stay human in these trying times, globalization, equality, love , democracy etc. He has rendered invaluable service to the Bodo people by expressing their hopes, desires and concerns to the world through his writing. As such, *Baidi Dengkhw Baidi Gab* is considered an important contribution to the genre of Indian poetry in Bodo.

**Addressing the 53rd Foundation day of Bodo Sahitya Sabha, Lumding**

डोगरी में पुरस्कृत

## ध्यान सिंह

(जन्म : 1939)

ध्यान सिंह वरिष्ठ डोगरी लेखक हैं। अपनी सृजन–यात्रा में आपने कविता, नाटक, निबंध तथा अनुवाद आदि विधाओं में एक दर्ज़न से अधिक पुस्तकों का प्रणयन किया है। आपने लोक–कथाकार के रूप में रुत्त–राह्दे की परंपरा को पुनर्जीवित करते हुए डोगरा संस्कृति को उत्कृष्ट योगदान दिया है। आप एक अनुमोदित रेडियो–कलाकार, नाटककार, फ़ीचर लेखक तथा सांस्कृतिक कार्यकर्त्ता भी हैं।

ध्यान सिंह का जन्म 1939 में जम्मू एवं कश्मीर राज्य के जम्मू में स्थित घारोता में हुआ। आपने बी.एड. तथा इतिहास एवं राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर की उपाधियाँ प्राप्त कीं। आपको अंग्रेज़ी, हिंदी तथा उर्दू भाषाओं का भी ज्ञान है। आपने अपने कार्य–जीवन की शुरुआत 1957 में एक प्राथमिक विद्यालय के अध्यापक के रूप में की तथा 1997 में आप ज़िला शिक्षा योजना अधिकारी के पद से सेवानिवृत्त हुए। आपने 1954 से लेखन प्रारंभ किया। आरंभ में आप सामाजिक चेतना के प्रगतिवादी समूह से प्रभावित हुए। आपकी प्रकाशित कृतियों में *फ़िलहाल* (1987), *सिलसिला* (1989), *सरिष्ठा* (1993), *रुमीजी मिसाल* (2002) (सभी कविता–संग्रह) *तथा रुत्त राह्दे* (निबंध–संग्रह) (1991) शामिल हैं। आपको डोगरी संस्था एवं साहित्य सभा, अखनूर के पुरस्कार–सम्मानों सहित, डोगरा रत्न, साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार (2014) तथा विरासत श्री (2014) सम्मान प्राप्त हैं।

पुरस्कृत कृति *परछामें दी लोऽ* ध्यान सिंह कृत डोगरी कविता–संग्रह है। आपकी कविताएँ मानव जीवन, विशेषतः डोगरा समाज से संबंधित हैं। आपकी कविताएँ सामाजिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक प्रसंगों के अतिरिक्त मानव मनोविज्ञान तथा जटिल मानसिक पहलुओं की गहरी पड़ताल करती हैं। कविताओं में प्रयुक्त बिंब एवं प्रतीक अपरंपरागत एवं विशिष्ट हैं, जो कविताओं को गूढ़ अर्थ प्रदान करते हैं। भाषा विशुद्ध डोगरी है, जो कविताओं के विषयों के लिए सर्वथा उपयुक्त है। यह कृति डोगरी में लिखित भारतीय काव्य को एक महत्त्वपूर्ण योगदान मानी गई है।

पत्नी के साथ

Award in Dogri to
**Dhian Singh**
(Born in 1939)

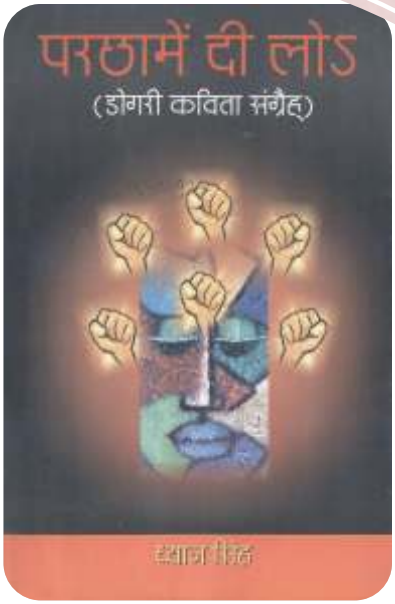


Dhian Singh is a veteran Dogri writer. In his prolific career, he has penned more than a dozen books covering various literary genres such as poetry, plays, essays and translations. He has made an outstanding contribution to Dogra culture by reviving the tradition of Rut-Rahde by virtue of being a folk-lorist as well. He is also an approved Radio artist, play-wright, feature writer and a cultural activist.

He was born in 1939 in Gharota, Jammu in the state of Jammu and Kashmir. He holds a Masters' Degree in History and Political Science and a B.Ed. Degree. Apart from Dogri, the languages known to him are English, Hindi and Urdu. He started his career as a teacher in 1957 and retired as District Education Planning Officer in 1997. He began composing poetry and songs as early as 1954. His early literary influences have been progressive schools of social consciousness. He has many published works to his credit including poetry *Filhaal* (1987), *Silsila* (1989) and others. He is the recipient of several awards and honours from Dogri Sanstha, Jammu, Social Forestry Department, Sahitya Sabha Akhnoor. He is the recipient of Dogra Rattan Award and Sahitya Akademi's Bal Sahitya Puraskar in 2014.

His awarded book, *Parchhamen Di Lo* is a book of poetry. The poems cover various aspects of human life, in particular, of the Dogra society. In addition to social, cultural and historical topics, the poems delve deep into human psychology and complex mental aspects. The imagery and symbols used in the poems are unconventional and unique which add depth to the poems. The language used in his book is chaste Dogri and is apt for the chosen themes. As such, *Parchhamen Di Lo* is considered an important contribution to the genre of Indian poetry in Dogri .

**During Dogri Book Exhibition with Dr. Karan Singh**

अंग्रेज़ी में पुरस्कृत

## साइरस मिस्त्री

(जन्म : 1956)

साइरस मिस्त्री एक प्रतिष्ठित भारतीय अंग्रेज़ी कथाकार और नाट्यकार हैं। आपने पत्रकार, वृत्तचित्र और फ़ीचर फ़िल्म लेखक जैसी अपनी अन्य भूमिकाओं में भी सफल संतुलन साधा है। आलोचकीय स्वीकार्यता के साथ व्यावसायिक सफलता प्राप्त करने वाले मिस्त्री विधा और विषयवस्तु के कुशल संयोजन की अपनी शिल्पकला में दक्ष हैं।

साइरस मिस्त्री का जन्म 1956 में मुंबई, महाराष्ट्र में हुआ। आप बंबई विश्वविद्यालय के कला स्नातक हैं। आपको हिंदी, गुजराती, तथा मराठी भाषाओं का भी ज्ञान है। आपने 21 वर्ष की आयु से लेखन प्रारंभ किया। आप मुख्य रूप से उन्नीसवीं सदी के रूसी उपन्यासकारों से प्रभावित रहे हैं। आपके पहले नाटक *डूंगाजी हाउस* ने 1978 में पद्मश्री पुरस्कार प्राप्त किया था। आपने अनेक लघु फ़िल्मों और वृत्तचित्रों की पटकथाएँ लिखी हैं, जिन्हें राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। 'पर्सी' नामक आपकी कहानी पर एनएफ़डीसी द्वारा एक फ़ीचर फ़िल्म का निर्माण किया गया था, जिसे 1993 में सर्वश्रेष्ठ गुजराती फ़िल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार तथा मन्नहिम फ़िल्मोत्सव, हाइडेलबर्ग में क्रिटिक्स अवार्ड प्राप्त हुआ। आप विगत 21 वर्षों से एक स्वतंत्र पत्रकार के रूप में कार्य कर रहे हैं। आपकी प्रकाशित कृतियों में हच–क्रॉसवर्ड अवार्ड के लिए लघुसूचीकृत आपका पहला उपन्यास *रॅडिएंस आफ़ एशेज़* (2005), साहित्य अकादेमी द्वारा 2010 में प्रकाशित *कॉटेम्पोरेरी इंडियन प्लेज़ इन इंग्लिश* में संगृहीत नाटक *द लीगेसी आफ़ रेज* तथा *पैसन फ़्लावर–सेवन स्टोरीज़ ऑफ़ डीरेंजमेंट* (2014) शामिल हैं।

पुरस्कृत कृति *क्रॉनिकल ऑफ़ ए कॉर्प्स बेअॅरर* साइरस मिस्त्री कृत अंग्रेजी उपन्यास है, जो अंग्रेज़ी में पारसी लेखन की समृद्ध परंपरा को एक महत्त्वपूर्ण योगदान है। यह उपन्यास हाशिए पर पड़े पारसी शववाहकों के एक समुदाय खांदियास की सच्ची, बेहद चौंकाने एवं व्यथित कर देनेवाली कहानी से प्रेरित है। यह प्रेम कहानी दुखद होने के साथ–साथ उत्कृष्ट भी है। उपन्यासकार ने इस उपन्यास को मनोदशा एवं आख्यान पर पूर्ण संतुलन रखकर रचा है। यह एक उत्कृष्ट उपन्यास है, जिसमें पाठकों को भीतर तक हिला देने की क्षमता है। यह कृति अंग्रेज़ी में लिखित भारतीय कथा–साहित्य को एक महत्त्वपूर्ण योगदान मानी गई है।

परिवार के साथ

Award in English to
**Cyrus Mistry**
(Born in 1956)

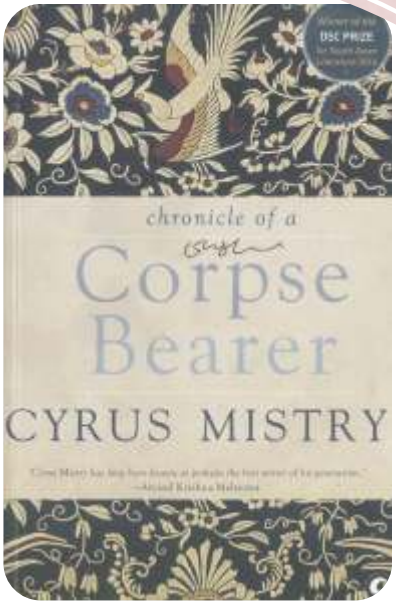


Cyrus Mistry is an eminent Indian English novelist and playwright. Mistry is a wordsmith excelling in various literary forms such as plays, short stories and novels. He has successfully balanced his varied roles including that of a journalist, documentary and feature film writer. Both critically acclaimed and commercially feted, he is a master of his craft, skillfully merging form with content.

He was born on 1956, in Mumbai, Maharashtra. He studied B.A. in English Literature and Psychology from Bombay University. Besides English, he knows Hindi Gujarati and Marathi. He began writing at the young age of 21. His major literary influences have been world writers especially the Russian novelists of the 19th century. His first play *Doongaji House* won the Sultan Padamsee Award in 1978. One of his short stories "Percy" was made into a feature film by NFDC which won a National Award for the Best Gujarati Film in 1993 and the critics Award at the Mannheim Film Festival at Heidelberg in the same year. Some of his significant works are his first novel *The Radiance of Ashes* (2005), shortlisted for the Hutch-Crossword Award, *The Legacy of Rage*—first published by the Sahitya Akademi as part of contemporary Indian plays in English (2010) and *Passion Flower—Seven Stories of Derangement* (2014).

Cyrus Mistry's novel *Chronicle of a Corpse Bearer* is a fascinating contribution to the rich tradition of Parsi writing in English. It is derived from a true yet disturbing story about the miniscule minority of Parsi corpse bearers called Khandiyas. The moving love story is both tragic and transcendent. The author has crafted this novel with complete control over mood and narrative. This is a brilliant novel which has the power to move the reader profoundly. As such, *Chronicle of a Corpse Bearer* is considered an important contribution to the genre of Indian novel in English.

**Receiving the DSC Prize for South Asian Literature, 2014**

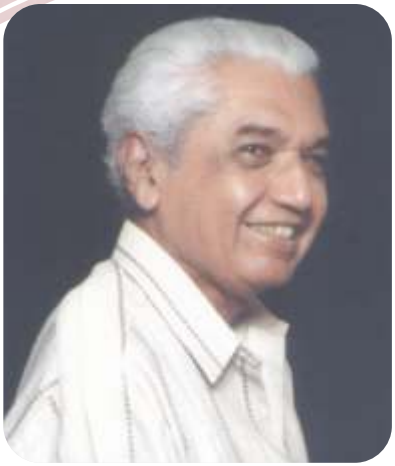

गुजराती में पुरस्कृत

## रसिक शाह

(जन्म : 1922)

रसिक शाह विख्यात गुजराती लेखक तथा निबंधकार हैं। आपका योगदान विमर्श की नैतिक, मानवतावादी भाषा तक पहुँचने के लिए संघर्ष पर ध्यान केंद्रित करता है। आपकी रचनाएँ कम से कम दो पीढ़ियों के गुजराती कवियों, लेखकों तथा आलोचकों की संवेदनाओं को रूपाकार देती हैं।

रसिक शाह का जन्म 1922 में मुंबई में हुआ। आपने बंबई विश्वविद्यालय से समाजशास्त्र में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। आपको हिंदी, बाङ्ला, संस्कृत तथा अंग्रेज़ी भाषाओं का भी ज्ञान है। आपने अपने कार्य–जीवन की शुरुआत एक प्राइवेट ट्यूटर के रूप में की, फिर आप एक प्राइवेट कंपनी में प्रबंधक के रूप में काम करने लगे। बाद में आपने डॉ. सुरेश जोशी और जयंत पारेख के साथ मिलकर *मनीषा, ऊहापोह, क्षितिज* तथा *एतद नामक* पत्रिकाओं के प्रकाशन की शुरुआत की और उनका सह–संपादन किया। आप डॉ. सुरेश जोशी, रवींद्रनाथ ठाकुर, फ्रैंज़ काफ़्का तथा विल्हेम रिच के साहित्य से प्रभावित हैं। रसिक शाह ने गुजराती में दर्शन, मनोविज्ञान, गणित और शिक्षा के विशिष्ट प्रश्नों को लेकर नवीन आलोचनात्मक विमर्श उपस्थित किए हैं।

पुरस्कृत कृति *अंते आरंभ (खंड I और II)* रसिक शाह कृत दो खंडों में प्रकाशित विचारोत्तेजक निबंधों का संग्रह है, जिसे पूर्ण यथार्थता, शुद्धता एवं स्पष्टता के साथ लिखा गया है तथा जो मानव बुद्धि के अनुरूप अनुभूतियों की बारीकियों एवं संसार के प्रति उसकी समझ को उद्घाटित करता है। पुस्तक में विभिन्न विषयों पर सशक्त विमर्श और वाद–विवाद प्रस्तुत किया गया है, जो गुजरात के सृजनात्मक लेखकों के लिए अवधारणात्मक संरचना प्रदान करता है। यह कृति गुजराती में लिखित भारतीय निबंध साहित्य को एक महत्त्वपूर्ण योगदान मानी गई है।

परिवार के साथ

Award in Gujarati to
**Rasik Shah**
(Born in 1922)

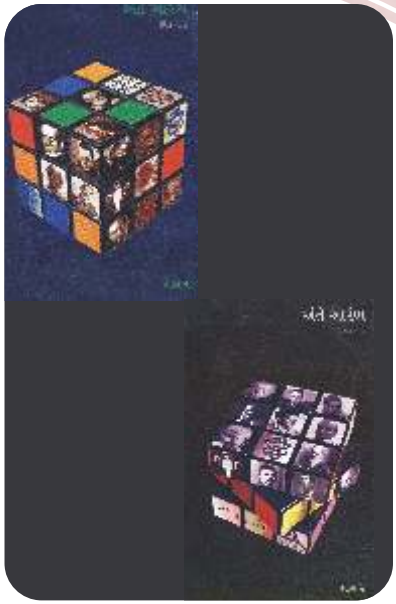

Rasik Shah is a noted Gujarati writer and essayist. His contribution has been a focused attention on the struggle to arrive at an ethical, humanist language of discourse. His writings have shaped the sensibilities of atleast two generations of Gujarati poets, writers and critics.

He was born in 1922 in Mumbai. He holds a Master's Degree in Sociology from the University of Bombay. Apart from Gujarati, the languages known to him are Hindi, English, Bengali and Sanskrit. He started his career as a private tutor and moved on to work as a manager in a private company and finally co-founded and co-edited and published a series of Gujarati periodicals along with Dr. Suresh Joshi and Jayant Parekh, these were – *Maneesha, Uhapoh, Kshitij* and *Etad*. His major literary influences have been Rabindranath Tagore, Dr. Suresh Joshi, Franz Kafka and Willheim Reich.

Rasik Shah has created unprecedented critical discourse around significant questions in philosophy, psychology, mathematics and education in Gujarati. His awarded book, *Ante Aarambh – Part 1 & 2*, is a collection of thought-provoking essays written with precision, clarity and lucidity which bring out a nuanced perception of the mental world. Various subjects are discussed and debated with utmost vigour thus providing a conceptual framework for some of the practicing creative writers of Gujarat. As such, *Ante Aarambh – Part 1 & 2* is an important contribution to the genre of Literary Essay in Gujarati.

**With Prof. Haridas Patel, (late) Bhupen Khakkar, Dr. Sunil Kothari and Smt. Kala Shah in 1990**

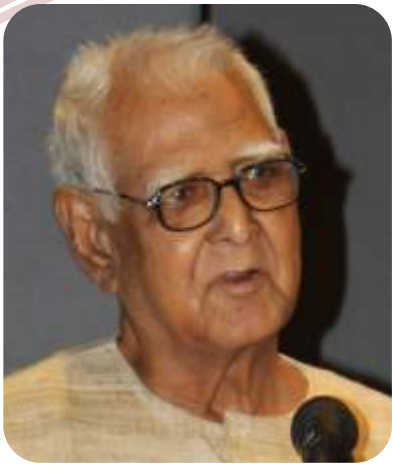

हिंदी में पुरस्कृत

## रामदरश मिश्र

(जन्म : 1924)

रामदरश मिश्र हिंदी के वरिष्ठ कवि, कथाकार, निबंधकार और आलोचक हैं। आपने काव्य और कथा के विभिन्न रूप–शैलियों में तो लिखा ही, आत्मकथा, यात्रावृत्त, डायरी, संस्मरण आदि विधाओं में भी अपनी कलम चलाई है। आपकी रचनाओं में ज़मीनी यथार्थ की अभिव्यक्ति के साथ–साथ भारतीय संस्कृति की अनुगूँजें हैं। लोक–जीवन की आत्मीय सरलता, सामाजिक–सांस्कृतिक एवं पारंपरिक संबंधों की विशिष्ट अभिव्यक्ति आपकी रचनाओं में मिलती है। अभिशप्तों, शोषितों के साथ चलकर उनकी आत्माभिव्यक्ति को मुखर रूप देते हुए आपकी सभी विधाओं की रचनाओं में उनके परिवेशगत यथार्थ के चित्रण तथा उनकी नियति को बदलने की चेष्टा स्पष्टतः देखी जा सकती है।

रामदरश मिश्र का जन्म 1924 में उत्तर प्रदेश स्थित गोरखपुर ज़िले के डुमरी गाँव में हुआ। आपने हिंदी भाषा एवं साहित्य में स्नातकोत्तर तथा पी–एच.डी. की उपाधियाँ प्राप्त की हैं। आपके कार्य–जीवन का आरंभ सयाजीराव गायकवाड़ विश्वविद्यालय, बड़ौदा के हिंदी प्राध्यापक के रूप में 1956 में हुआ। बाद में आप गुजरात विश्वविद्यालय से संबद्ध हुए, फिर 1964 में दिल्ली विश्वविद्यालय आ गए, जहाँ से प्रोफ़ेसर पद से सेवानिवृत्त हुए। रामदरश मिश्र की प्रमुख प्रकाशित कृतियों में *पथ के गीत, बैरंग–बेनाम चिट्ठियाँ, पक गई है धूप, हँसी ओठ पर आँखें नम हैं, आग की हँसी, अपना रास्ता* (काव्य–संग्रह), *पानी के प्राचीर, जल टूटता हुआ, आदिम राग, बचपन भास्कर का* (उपन्यास), *खाली घर, एक वह, बसंत का एक दिन, स्वप्नभंग, इस बार होली में* (कहानी–संग्रह), *छायावाद का रचनालोक, आधुनिक हिंदी कविता : सर्जनात्मक संदर्भ* (आलोचना), *घर से घर तक, देश यात्रा* (यात्रावृत्त), *स्मृतियों के छंद, एक दुनिया अपनी* (संस्मरण) सम्मिलित हैं। आपको साहित्यकार सम्मान, साहित्य भूषण सम्मान, शलाका सम्मान, रामविलास शर्मा सम्मान, महापंडित राहुल सांकृत्यायन सम्मान, सारस्वत सम्मान, व्यास सम्मान, राष्ट्रीय साहित्यिक पुरस्कार, विश्व हिंदी सम्मान आदि अनेकानेक पुरस्कार–सम्मानों से विभूषित किया जा चुका है।

पुरस्कृत कृति *आग की हँसी* रामदरश मिश्र का हिंदी कविता–संग्रह है। इसकी उच्चस्तरीय कविताओं में नया स्पंदन और दृष्टि की सघनता है। विषयवस्तुगत वैविध्य के साथ–साथ इस संग्रह की कविताएँ शिल्पगत विशिष्टता के नाते भी महत्त्वपूर्ण हैं। ये कविताएँ मानवीय मूल्यों से सरोकार रखती हैं, जिनकी खोज मानवीय जीवन की साधरणता में की गई है। इनमें अभिव्यक्त विचार एवं अनुभव सहज तथा स्पष्ट हैं, जिनसे पाठक अपना तादात्म्य स्थापित कर लेता है। यह कृति हिंदी में लिखित भारतीय काव्य को एक महत्त्वपूर्ण योगदान मानी गई है।

परिवार के साथ

Award in Hindi to
**Ramdarash Mishra**
(Born in 1924)

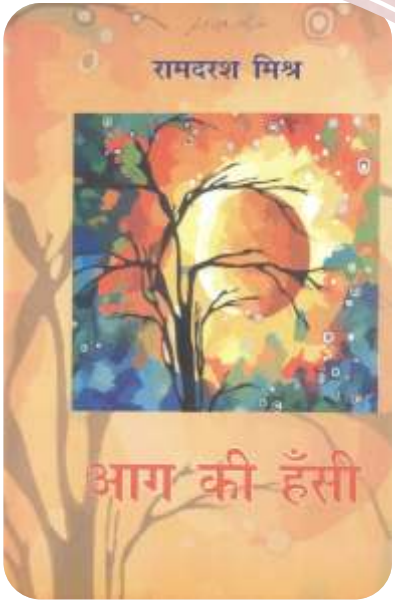


Ramdarash Mishra is an eminent Hindi poet, story writer, essayist and critic. He has written in various genres of literature and short stories, as well as biography, travelogue, diary and memoirs. In his writings, ground realities of the times echo with Indian culture. His writings prominently express the simplicity of folk-life and socio-cultural and traditional relations. He stands with the cursed and exploited people and boldly expresses their lives in his writings that amplify his desire to see change in there destinies.

He was born in 1924 in Dumri village of Gorakhpur district in Uttar Pradesh. He holds M.A. and Ph.D. degrees in Hindi language and literature. He started his career as a Lecturer at Sayajirao Gaekwad University, Baroda in 1956. Later, he was associated with Gujarat University then in 1964 he came to Delhi University, where he retired from the post of a Professor. Collection of his published books include, *Path Ke Geet, Berang-Benam Chittiyaan, Pak Gayi Hai Dhoop, Hansi Onth Par Aanken Nam Hain, Aag Ki Hansi, apna Raasta* (Poetry collection), *Pani Ke Prachir, Jal Tutta Hua, Aadim Raag, Bachpan Bhaskar Ka* (Novel), *Khali Ghar, Ek Vyah, Basant Ka Ek Din, Swapanbhang, Is Baar Holi Mein* (Short story collection), *Chayyavaad Ka Rachnalok, Adhunik Hindi Kavita! Sarjanatamak Sandarbh* (Criticism), *Ghar Se Ghar Tak, Desh Yatra* (Tavelogue), *Smritiyon Ke Chhand, Ek Duniya Apni* (Memoirs). He is the recipient of Sahityakar Samman, Sahitya Bhushan Samman, Shalaka Samman, Ramvilas Sharma Samman, Mahapandit Rahul Sankrityayan Samman, Saraswat Samman, Vyas Samman, Rashtriya Sahityik Puraskar, Vishwa Hindi Samman and many other awards.

His awarded book, *Aag Ki Hansi*, is a poetry collection. These high intensity poems have new vibration and acute vision. His poems deal with human values and he searches them in the ordinariness of human life. He expresses his thoughts and various experiences with great simplicity and clarity making the reader identify with it at once. This collection is important for its variation of content. As such, *Aag Ki Hansi* is an important contribution to the genre of poetry in Hindi.

**Receiving award from Smt. Krishna Sobti & Smt. Sheila Dikshit, former CM of Delhi**

कन्नड में पुरस्कृत

## के. वि. तिरुमलेश

(जन्म : 1940)

के.वि. तिरुमलेश प्रतिष्ठित कन्नड कवि तथा आलोचक हैं। आपकी कविताएँ आपकी विदग्ध दृष्टि तथा जीवन के ताने–बाने की गहरी समझ को प्रतिबिंबित करती हैं। आपकी कल्पनाशीलता, शब्दों का प्रयोग तथा गहन दार्शनिक चिंतन पाठकों द्वारा सराहा जाता रहा है।

के. वि. तिरुमलेश का जन्म 1940 में केरल के करदका गाँव में हुआ। आपने सी.आई.ई.एफ.एल. हैदराबाद से अंग्रेज़ी भाषा विज्ञान में पी–एच.डी. की उपाधि प्राप्त की है। आपको मलयाळम् तथा हिंदी भाषाओं का भी ज्ञान है। आपने कर्नाटक, केरल तथा हैदराबाद के विभिन्न स्थानों पर अंग्रेज़ी का अध्यापन किया। आपने अमेरिका के आयोवा विश्वविद्यालय में कन्नड तथा कन्नड संस्कृति का अध्यापन भी किया। आपने अपने कॉलेज जीवन में लेखन प्रारंभ किया। आपके साहित्य पर प्रमुख रूप से गोपाल कृष्ण अडिग तथा फ्रैंज काफ़्का का प्रभाव है। आपकी उल्लेखनीय कृतियों में *मुखामुखी, अवध* तथा *सम्मुख* शामिल हैं, जिनमें से प्रथम को आषान पुरस्कार तथा अन्य को कर्नाटक साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

पुरस्कृत कृति *अक्षय काव्य* के. वि. तिरुमलेश कृत कन्नड कविता–संग्रह है, जो नवीन प्रयोग है। यह वर्तमान समय की कठिन परिस्थितियों को दर्शाता है तथा इसका प्रस्तुतिकरण अत्यंत चित्रात्मक है। कवि ने विभिन्न सभ्यताओं के रूपकों एवं प्रतीकों को एकत्रित कर उनके प्रयोग से कविता–संग्रह को अत्यंत चित्रमय स्वरूप प्रदान किया है। यह कविता–संग्रह शिल्प, शैली और सृजनात्मक दृष्टि के नाते कविता को नई ज़मीन प्रदान करता है। यह कृति कन्नड में लिखित भारतीय काव्य को एक महत्त्वपूर्ण योगदान मानी गई है।

परिवार के साथ

Award in Kannada to
**K.V. Thirumalesh**
(Born in 1940)

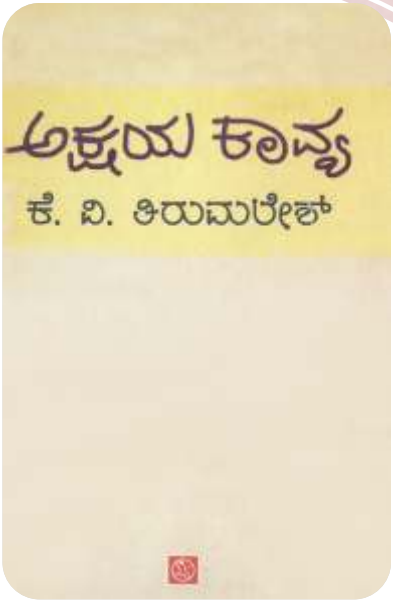


K.V. Thirumalesh is an acclaimed Kannada poet and critic. His poems reflect his astute vision and his deep understanding of the warp and weft of life. His imagery and usage of words and deep philosophical musings has long been appreciated by the readers.

He was born in 1940 in Karadaka village in Kerala. He holds a Doctorate in English Linguistics from C.I.E.F.L., Hyderabad. Apart from Kannada he knows English, Malayalam and Hindi. He started his career as an English teacher at various places in Karnataka, Kerala and Hyderabad and also at Sana's in Yemen. He taught beginners' Kannada and Kannada Culture at the University of Iowa, U.S.A. He started writing while in college. His major literary influences have been Gopalakrishna Adiga and Franz Kafka. He has been widely published and awarded for his poetry collections. His poetry collections include *Mahaprasthana, Mukha Mukhi* which won the Asan Award (1981), *Avadha* which won the Karnataka Sahitya Academy Award (1982) and *Sammukha* his book of literary criticism won the Karnataka Sahitya Academy Award.

His awarded book, *Akshaya Kavya,* is a novel experiment. It depicts the predicament of present times and has picturesque descriptions. The poet achieves this by the usage of innumerable metaphors and symbols. *Akshaya Kavya* breaks new ground in poetry by being a beautiful blend of form, style and creative vision. As such, *Akshaya Kavya* is a considred a major contribution to the genre of poetry in Kannada .

**At a Literary Conference in the USA**

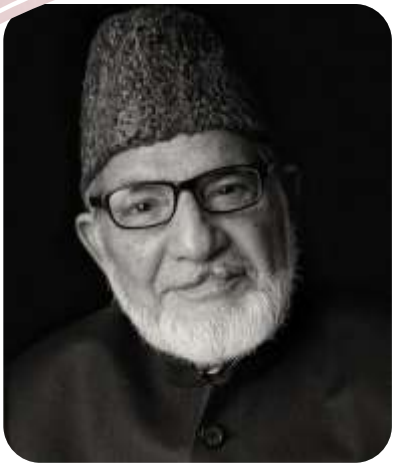

कश्मीरी में पुरस्कृत

**बशीर भद्रवाही**

(जन्म : 1935)

बशीर भद्रवाही एक सुपरिचित कश्मीरी एवं उर्दू लेखक हैं, जिनकी रचनाएँ संवेदनशीलता से कश्मीरी लोकाचार को अभिव्यक्त करती हैं। भाषाई लालित्य तथा दार्शनिक गंभीरता वाली आपकी रचनाएँ कश्मीरी संस्कृति को समझने में सहायक हैं।

बशीर भद्रवाही का जन्म 1935 में जम्मू एवं कश्मीरी स्थित भद्रवाह में हुआ। आपने कश्मीर विश्वविद्यालय से उर्दू में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की। आपको अंग्रेज़ी, भद्रवाही और किश्तवारी भाषाओं का भी ज्ञान है। आपने अपने कार्य–जीवन की शुरुआत एक शिक्षक के रूप में की तथा प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च विद्यालय (1953–1961) में अध्यापक के रूप में कार्य किया। बाद में आपने हेडमास्टर, तहसील शिक्षा अधिकारी, अनुसंधान अधिकारी, परियोजना अधिकारी, प्रधानाचार्य तथा ज़िला शिक्षा अधिकारी जैसे विभिन्न पदों पर कार्य किया और 40 वर्षों की लंबी सेवा–अवधि पूर्ण कर 1993 में सेवानिवृत्त हुए। आपने अपने विद्यार्थी–जीवन में लेखन प्रारंभ किया तथा कविता, गद्य एवं आलोचना लिखी। आपके साहित्य पर हब्बा खातून, महमूद ग़नी, रसूली मीर एवं महजूर का प्रभाव है। आप पर आपके शिक्षक अब्दुल कदूस रसा जविदानी की काव्यशैली के साथ–साथ इक़बाल, ग़ालिब, मीर, मोमिन और फैज़ का भी प्रभाव है। गद्य लेखन में आप मोहम्मद यूसुफ बेग से प्रभावित हैं। आपकी उल्लेखनीय कृतियों में *गोशान हिन्द पोश, तोफ़ा–ए–आज़मीन–हिजाज़, रहमातून के साए* (2015) तथा कश्मीरी लोक गीतों के संकलन शामिल हैं। आपको कश्मीरी भाषा एवं साहित्य में योगदान के लिए जे. एंड के. कला, संस्कृति एवं भाषा एकेडमी ने सम्मानित किया तथा कश्मीरी साहित्य में योगदान हेतु आपको अदबी मरकज़ कामराज़ द्वारा 'शर्फ़–ए–कामराज़' उपाधि से विभूषित किया गया है।

पत्नी के साथ

पुरस्कृत कृति *जमिस त कशीरी मंज़ कशीर नातिया अदबुक तवारीख़* बशीर भद्रवाही कृत कश्मीरी आलोचना कृति है, जिसमें कश्मीरी साहित्य की अत्यंत महान एवं प्राचीन शैली 'नात' की विस्तृत विवेचना की गई है। लेखक ने इस विधा पर गंभीरता से सांगोपांग विमर्श प्रस्तुत किया है। यह कृति कश्मीरी में लिखित भारतीय समालोचना को एक महत्त्वपूर्ण योगदान मानी गई है।

Award in Kashmiri to
**Bashir Bhadarwahi**
(Born in 1935)

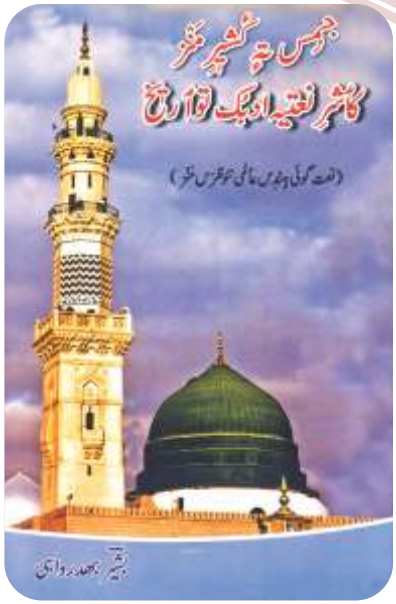

Bashir Bhadarwahi is a very well-known Kashmiri writer whose writing sensitively captures the Kashmiri ethos. His writing has linguistic elegance and philosophical depth which has added to the understanding of Kashmiri culture.

He was born in 1935 in Bhadarwah, Jammu and Kashmir. He is an M.A. in Urdu from Kashmir University. The languages known to him are Urdu, Kashmiri, Bhadarwahi and English. He started his career as an educationist. He has served the field of Education in various capacities such as Research Officer, Principal and District Education officers. He retired in 1993 with a distinguished service of 40 years. He started writing while in school and has written poetry, prose, criticism. He writes in Urdu as well. His literary influences range from the poetry of Habba Khatoon, Mahmud Gani, Rasool Mir and Mehjoor. He was also influenced by the poetic style of his teacher Abdul Qadus Rasa Javidani as also the poetry of Allama Iqbal, Mirza Ghalib, Mir Taqi Mir, Momin and Faiz. A number of his books have been published and awarded such as a compilation of Kashmiri folk songs (1972), *Goshan Hind Posh* (poetry collection, 1998), *Tohfa-e-Aazmeen-Hijaz* (2005), *Rahmaton ke Saaye* (2015), among many others. Among the many awards he has received are Sharf-i-Kamraz Award for Contribution to Kashmiri Language and Literature, awarded by Adbi Markaz Kamraz, a literary organization of Kashmir.

His awarded book, *Jamis Ta Kasheeri Manz Kashir Natia Adbuk Tawareekh,* is a book of literary criticism of 'Naat'. The book is a most comprehensive compendium of a great and ancient genre of Kashmiri literature. He has diligently discussed the exponents of this genre. As such, *Jamis Ta Kasheeri Manz Kashir Natia Adbuk Tawareekh* is a major contribution to the genre of literary criticism in Kashmiri.

**Receiving Sharf-i-Kamraz Award from Adbi Markaz Kamraz, Kashmir**

कोंकणी में पुरस्कृत

**उदय भेंब्रे**

(जन्म : 1939)

उदय भेंब्रे कोंकणी के प्रतिष्ठित लेखक हैं, जिनकी कृतियों ने कोंकणी साहित्य को समृद्ध करने में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। अपने जीवन के शुरुआती दिनों में थिएटर में आपकी भागीदारी का प्रभाव आपकी रचनाओं पर देखने को मिलता है। आपकी रचनाएँ सामाजिक अंतःकरण को जागृत करने का कार्य करती हैं तथा स्पष्ट एवं भेदक हैं। आपके विषय ऐतिहासिक घटनाओं से लेकर वर्तमान राजनीतिक एवं सामाजिक घटनाओं से संबंधित हैं।

उदय भेंब्रे का जन्म 1939 में मडगाँव, गोवा में हुआ। आपने पुणे विश्वविद्यालय से बी.ए. (ऑनर्स) तथा बंबई विश्वविद्यालय से एल.एल.बी. की उपाधियाँ प्राप्त कीं। आपको मराठी, हिंदी, पुर्तगाली तथा अंग्रेज़ी भाषाओं का भी ज्ञान है। आप 40 वर्षों से मडगाँव, गोवा में वकालत करते रहे हैं। आपने 12 वर्षों तक कोंकणी दैनिक *सुनापरांत* का संपादन किया। आपने सांस्कृतिक मोर्चे पर कोंकणी भाषा के लिए सक्रिय संघर्ष किया है। आप विभिन्न संस्थाओं से सक्रिय संबद्ध रहे हैं तथा गोवा कोंकणी अकादमी के अध्यक्ष रह चुके हैं। संप्रति, आप गोवा विश्वविद्यालय के कोंकणी विभाग में अध्यापन–कार्य कर रहे हैं। आपकी प्रकाशित कृतियों में *चान्नेआचे राति* (कोंकणी कविता–संग्रह, 1978) *ब्रह्मास्त्र* एवं *अस्मितायेचो कसाई* (मराठी में अख़बारों के लिए लिखित रचनाओं के संग्रह) शामिल हैं। इसके अलावा आपके 40 गीत आकाशवाणी और एच. एम.वी. के द्वारा संगीतबद्ध किए गए हैं। आपने कोंकणी और मराठी नाटकों में अभिनय भी किया है। आपको कुल्लागार पुरस्कार (1999), गुंडु सीताराम अमोणकर स्मृति पुरस्कार (2001), कोंकणी भाषा मंडल पत्रकारिता पुरस्कार (2008), गोवा राज्य सांस्कृतिक पुरस्कार, श्रीमती विमला वी. पै जीवन साधना पुरस्कार आदि से सम्मानित किया जा चुका है।

पुरस्कृत कृति *कर्ण पर्व* उदय भेंब्रे कृत कोंकणी नाटक है, जो महाभारत के एक प्रसंग पर आधारित है। आपने कर्ण–अर्जुन की शत्रुता के प्रसंग तथा कर्ण के वध में कृष्ण की भूमिका की अनूठी व्याख्या की है। यह नाटक अपनी सुंदर भाषा तथा सभी प्रसंगों के संवादों में सटीक शब्द–प्रयोग के कारण प्रशंसनीय है। यह कृति कोंकणी में लिखित भारतीय नाट्य साहित्य को एक महत्त्वपूर्ण योगदान मानी गई है।

परिवार के साथ

Award in Konkani to
**Uday Bhembre**
(Born in 1939)

Uday Bhembre is an acclaimed Konkani writer whose vast oeuvre has contributed significantly to the enrichment of Konkani literature. His involvement in theatre early in his life has a bearing on his writing. His writing serves to awaken social conscience and is clear and incisive. His subjects vary from historical events to present day political and social phenomenon.

He was born in 1939 in Margao, Goa into a family of freedom fighters which had a lifelong bearing on his psyche and influenced his writings and socio-cultural activities. He has actively championed the cause of Konkani language through the cultural outfits he has been a part of. He graduated in Law and practised it for more than 40 years. He currently teaches at the Department of Konkani of Goa University. The languages known to him apart from Konkani are Marathi, Hindi, Portuguese and English. His published work includes *Channeache Rati*, a collection of poems in Konkani (1978), *Brahmastra* and *Asmitayecho Kasai*, a collection of journalistic writings in Marathi and *Karnaparva,* the awarded Konkani play. Apart from these about 40 of his lyrics have been set to tune and recorded by All India Radio and H.M.V. He has acted in Konkani and Marathi plays. He won the Kullagar Puraskar (1999), Gundu Sitaram Amonkar Memorial Award (2001), Konkani Bhasha Mandal Patrakarita Puraskar (2008), Bhangrallem Goem Asmitai (2014) Puraskar among others.

His awarded book, *Karnaparva,* is a play based on an episode in the *Mahabharat*. He gives a unique interpretation to the Karna-Arjuna rivalry and Krishna's role in getting him killed. Beautifully crafted, the play is a valuable asset of Konkani literature. As such, *Karnaparva* is considered a major contribution to the genre of Indian plays in Konkani.

**Releasing Konkani Encyclopaedia at Goa University**

मैथिली में पुरस्कृत

**मनमोहन झा**

(जन्म : 1951)

मनमोहन झा मैथिली भाषा के प्रतिष्ठित लेखक हैं। आपने विभिन्न साहित्यिक पत्रिकाओं के लिए कहानियाँ, निबंध, संस्मरण तथा एकांकी नाटक लिखे हैं। आपकी लेखन शैली समृद्ध कल्पनाशीलता की आवाहक है तथा आपने अपनी रचनाओं में मिथिलांचल के जनजीवन का सच्चा एवं जीवंत चित्रण प्रस्तुत किया है।

मनमोहन झा का जन्म 1951 में पटना, बिहार में हुआ। आपने ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार से मनोविज्ञान में पी–एच.डी. की उपाधि प्राप्त की है। आपको हिंदी तथा अंग्रेज़ी भाषाओं का भी ज्ञान है। आपने अपने कार्य–जीवन की शुरुआत 1974 में सी. एम. कॉलेज, दरभंगा में व्याख्याता के पद से की। संप्रति, आप एल.एन.एम.यू., दरभंगा में मनोविज्ञान के प्रोफ़ेसर एवं डीन हैं। आपकी प्रकाशित कृतियों में *घर घुरैत काल* (1992) तथा *कोनो एकटा गाम* (1997) नामक कहानी–संग्रह शामिल हैं। आपको मैथिली समाज, रहिका (मधुबनी) के पुरस्कार के साथ–साथ किरण पुरस्कार प्राप्त है।

पुरस्कृत कृति *खिस्सा* मनमोहन झा कृत मैथिली कहानी–संग्रह है। इसकी कहानियाँ आधुनिक भारतीय कहानी लेखन का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। प्रत्येक कहानी वर्तमान मिथिला समाज के जीवन की मूल प्रवृत्ति, स्वभाव एवं मनोवृत्ति को प्रदर्शित करती है तथा मैथिली भाषा के सृजनात्मक लेखन को विश्वव्यापकता प्रदान करती है। यह कृति मैथिली में लिखित भारतीय कथा साहित्य को एक महत्त्वपूर्ण योगदान मानी गई है।

सुपुत्री के साथ

Award in Maithili to
**Man Mohan Jha**
(Born in 1951)

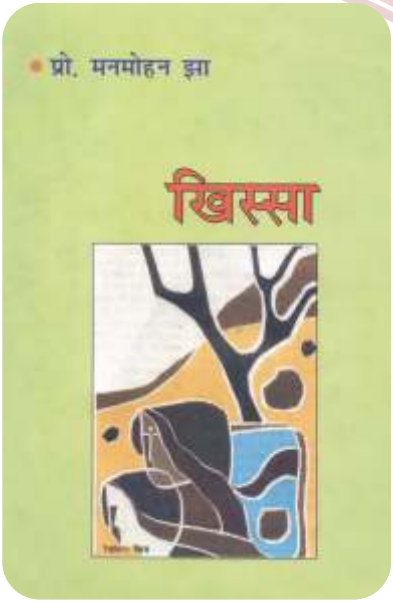


Man Mohan Jha is a distinguished writer of the Maithili language. He has written short stories, essays and one-act plays for various literary magazines. His writing style is evocative of rich imagery and presents an honest and moving picture of the people of his region.

He was born in 1951 in Patna, Bihar. He holds a doctorate in Psychology from L.N.M.U., Darbhanga (Bihar). The languages known to him apart from Maithili are English and Hindi. He started his career as a lecturer in Darbhanga and later on became a Reader and Professor. His writing has been influenced by his brother Rajmohan Jha's writing who is known for psychological insights in his stories. His notable books are, *Ghur Ghurait Kaal* and *Kono Ekta Gaam*. He is the recipient of Kiran Puraskar, Maithil Samaj and Rahika Madhubani awards.

His awarded book, *Khissa*, is a book of short stories and is an outstanding example of modern Indian short story writing. This book projects the life instincts, temperament and attitudes and mores of the present day Maithili society and universalizes the creative writing of Maithili. As such, *Khissa* is a major contribution to genre of short story in Maithili.

**With Hansraj, Govind Jha & Purnendu Chaudhary**

मलयाळम् में पुरस्कृत

## के. आर. मीरा

(जन्म : 1970)

के. आर. मीरा सुपरिचित मलयाळम् लेखिका और पत्रकार हैं, जिन्होंने मलयाळम् साहित्य के क्षेत्र में नई उद्‌भावनाओं के साथ प्रभूत योगदान किया है। आपकी रचनाओं में मानवीय मनोविज्ञान तथा मानसिक विकास के क्रम में नैतिक एवं मूल्यगत द्वंद्वों के प्रति आपकी गहरी दृष्टि का परिचय मिलता है। आपके उपन्यास विचारप्रधान तथा यादगार हैं।

के. आर. मीरा का जन्म 1970 में कोल्लम, केरल में हुआ। आपने गाँधीराम रूरल इंस्टीट्यूट से अंग्रेज़ी में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की है। आपको अंग्रेज़ी और तमिळ भाषाओं का भी ज्ञान है। आपने विद्यार्थी जीवन में लेखन प्रारंभ किया। आपने अपने कार्य–जीवन की शुरुआत एक पत्रकार के रूप में की। 13 वर्षों तक मलयाळम् पत्रिका *मलयाला मनोरमा* में कार्य करने के उपरांत आपने 2006 में प्रधान उप–संपादक पद से इस्तीफ़ा दे दिया तथा स्वतंत्र लेखन प्रारंभ कर दिया। आपकी प्रकाशित कृतियों में *युडसिंते सुविशेषम, नेत्रोन्मीलनम, मीरसाधु, आ मरथेयुम मरन्नु मरन्नु न्जान* (सभी उपन्यास); *मीरयुडे नोवेल्लकळ मालाखयुदे मरूकुकळ करिनील* (सभी लघु उपन्यास); *ओर्मयुडे नजरम्बु, मोह मंज, एवे मरियडे, गुइलोटिन, कथकळ : के.आर. मीरा* (सभी कहानी–संग्रह); *अम्मुवुम चित्तम* (बाल साहित्य) तथा *मषायिल परक्कुन्न पक्षिकळ* (निबंध–संग्रह) शामिल हैं। *आराचार* नामक आपका कहानी–संग्रह मलयाळम् के प्रायः सभी प्रमुख पुरस्कारों का विजेता और सर्वाधिक पढ़ी जाने वाली कृति है। आपको वयलार पुरस्कार, केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार, पी. पद्‌मराजन मेमोरियल पुरस्कार, तोप्पिल रवि स्मारक साहित्य पुरस्कार, अनकानम साहित्यिक पुरस्कार आदि से सम्मानित किया जा चुका है।

पुरस्कृत कृति *आराचार* के.आर. मीरा कृत मलयाळम् उपन्यास है, जो एक महिला की अशांत मानसिकता एवं दुःखों का वर्णन करता है। लेखिका ने उपन्यास की नायिका के माध्यम से विभाजन से पूर्व तथा बाद के जटिल भारतीय समाज में हिंसा तथा न्याय से जुड़े मुद्दों को छुआ है। नायिका स्वयं को विकसित करते हुए नई परिस्थितियों तथा आयामों की पड़ताल करती है। पुस्तक की शैली यथार्थवादी एवं प्रामाणिक है। यह कृति मलयाळम् में लिखित भारतीय कथा साहित्य को एक महत्त्वपूर्ण योगदान मानी गई है।

परिवार के साथ

Award in Malayalam to
**K.R. Meera**
(Born in 1970)

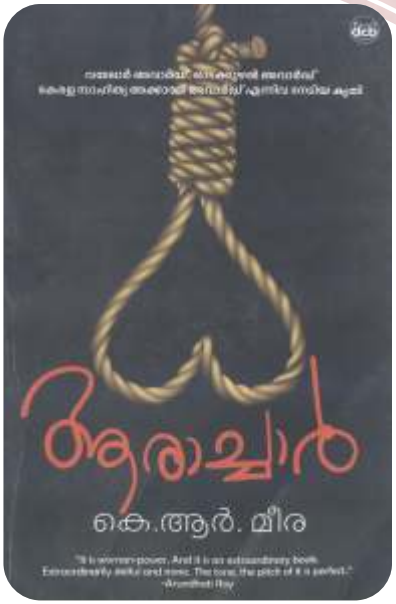


K.R. Meera is a well-known Malayalam writer and journalist who has contributed immensely and has given a new direction in the field of Malayalam literature. Her writing reflects her deep insight into human psychology and the moral and ethical dilemmas that are so much a part of mental evolution. Her novels have a brooding, haunting quality to them.

She was born in 1970 in Kollam, Kerala, to parents who were college Professors. She completed her post graduation in English in 1993. She started her career as a journalist and for thirteen years worked with Malayala Manorama, a leading daily of Kerala. Apart from Malayalam, the languages known to her are English and Tamil. She started writing in school days itself and won prizes at the school and district level competitions. In 2001 her first story "Sarpa yajnam" appeared in—*The Mathrubhumi Weekly*. The first collection of her short stories was published as *Ormayude Njarampu* in 2002. Her published work includes *Aa Maratheyum Marannu Marannu Njaan* (2006), *Meerasaadhu* (2005), *Netromeelanam* (2008), *Yudasinte Suvisesham*, 2009 and *Aaraachar* (2012) which won all the major awards in Malayalam and topped the best-seller list. It's English translation Hangwoman was published in 2014 and shortlisted for the DSC Literary Prize 2016. She has won innumerable awards in her chequered career including the Kerala Sahitya Academy Award, Vayalar Award, Odakkuzhal Award and the Nooranad Haneef Memorial Award for *Aaraachar*.

Her awarded novel, *Aaraachar*, is an unexplored realm of a 'Hangwoman' and her traumas. The writer explores the troubled psyche of a woman who has donned the mantle of the first ever hangwoman in India. Building upon the moral choices that confront her heroine, she touches upon the perennial issues of violence, justice and mercy set in the context of the convoluted Indian reality before and after the Partition. As such, *Aaraachar* is an important contribution to the genre of Indian novel in Malayalam.

**Activist-author Arundhati Roy releasing the book 'Hang Woman' written by the author**

मणिपुरी में पुरस्कृत

## क्षेत्रि राजेन

(जन्म : 1968)

क्षेत्रि राजेन सुपरिचित मणिपुरी कवि हैं, जिन्होंने शिल्प को परिवर्तन के वाहक के रूप में प्रयुक्त किया है। आपकी कविताएँ जीवन और संस्कृति की संवेदनाओं को प्रस्तुत करती हैं तथा उनके सरोकारों, आशाओं एवं आकांक्षाओं को स्वर देती हैं।

क्षेत्रि राजेन (पूरा नाम : क्षेत्रिमयुम राजेन सिंह) का जन्म 1968 में लेइशङ्थेम अवाङ् लेइकइ, थोउबल, मणिपुर में हुआ। आप कला स्नातक हैं। आपको हिंदी तथा अंग्रेज़ी भाषाओं का भी ज्ञान है। संप्रति, आप प्रथम मणिपुर राइफ़ल्स, इंफ़ाल में हवलदार के पद पर कार्यरत हैं। आपने 2001 से लेखन प्रारंभ किया। आपकी प्रकाशित कृतियों में *नोङ्लीक* (2003), *मूर्तिशिङी मामी* (2005) तथा *चारूगी खङ्पोकङ* (2012) नामक कविता–संग्रह शामिल हैं। आपकी दो पुस्तकों के अंग्रेज़ी अनुवाद भी प्रकाशित हैं तथा आपने *रोमांटिसिज़्म इन मणिपुरी पोएट्री* (2013) नामक पुस्तक का संपादन किया है। आपको चिङ्खु–मोइरंग लेइमा निंगशिंग कबीरदास मान तथा श्रेष्ठ सेवा के लिए वर्ष 2014 में पुलिस पदक से सम्मानित किया गया है। आपकी खेलों में भी रुचि है तथा आपने गीत भी लिखे हैं। आप आकाशवाणी के अनुमोदित गीतकार हैं।

पुरस्कृत कृति *अहिंना येकसिल्लिबा मङ* क्षेत्रि राजेन कृत मणिपुरी कविता–संग्रह है। संकलित कविताएँ मुख्यतः वर्तमान सामाजिक जीवन एवं इसे जीने के ढंग से जुड़े असंतोष तथा असंगति से संबंधित हैं। कुछ कविताओं में कवि ने महिलाओं के समक्ष आनेवाली रोज़मर्रा की समस्याओं के प्रति असंतोष प्रकट किया है। कवि ने आमजन के उत्पीड़ित एवं दमित जीवन तथा स्थिति को व्यक्त करने का पूर्ण प्रयास किया है। अधिकांश कविताओं में सुंदर एवं सटीक बिंबविधान का प्रयोग किया गया है। यह कृति मणिपुरी में लिखित भारतीय काव्य को एक महत्त्वपूर्ण योगदान मानी गई है।

पत्नी के साथ

Award in Manipuri to
**Kshetri Rajen**
(Born in 1968)

Kshetrimayum Rajen Singh is a well-known Manipuri poet who uses his craft as an agent of change. His poems reflect his sensitivity towards the culture and ethos of Manipuri people and voices their concerns, hopes and aspirations. Rich in content and style, they leave a lasting impact on the reader.

He was born in 1968 in Thoubal, Manipur. He completed his B.A. and joined the Armed Forces and is now with the 1st Manipur Rifles. Apart from Manipuri he also knows Hindi and English. He has also been an active member of various literary outfits in Manipur. He started writing poetry in 2001 and, since then, has a number of published poetry collections to his credit including, *Nongleek* (2003) *Murtishingi Mami* (2005), *Ahingna Yekshilliba Mang* (2009), *Charugi Khangpokshang* (2012) and a critique—*Romanticism in Manipuri Poetry* (2013) compiled and edited by him. Two of his books have been translated into English as *Shadow of Statue* (2007) and Raindrops (2008). He has been awarded the Chingkhu-Moirang Leima Ningshing Kabirdas Mana (2014) and the Police Medal for Meritorious Service, also in 2014. His other interests lie in sports and he also pens lyrics and is an approved lyricist with All India Radio, Imphal.

His awarded book, *Ahingna Yekshilliba Mang*, is a collection of 91 poems. The poet's longing for peace and harmony in the midst of all the violence and restlessness prevailing in the present society has been expressed very effectively by using the rich resources of the Manipuri language. These poems cover a wide range of themes including the common people's craving for tolerance and peace in a world helplessly harassed by the forces of evil. Infact, this book is a remarkable contribution to Manipuri literature. As such, *Ahingna Yekshilliba Mang* is a major contribution to the genre of poetry in Manipuri

**Receiving Meritorious Police Medal from Ibobi Singh, Hon'ble Chief Minister of Manipur**

मराठी में पुरस्कृत

**अरुण खोपकर**

(जन्म : 1945)

अरुण खोपकर प्रख्यात फ़िल्म अभिनेता, निर्देशक एवं निर्माता होने के साथ प्रतिष्ठित मराठी लेखक हैं। फ़िल्म विशेषज्ञ के रूप में आपकी एक अंतरराष्ट्रीय पहचान है। चित्रकला, नृत्य, संगीत, कविता और स्थापत्य पर निर्मित अपनी लघु फ़िल्मों की शृंखला के लिए सुपरिचित अरुण खोपकर विभिन्न प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थानों में फ़िल्मांकन कला के लोकप्रिय शिक्षक हैं।

अरुण खोपकर का जन्म 1945 में बंबई, महाराष्ट्र में हुआ। आप बंबई विश्वविद्यालय के विज्ञान स्नातक हैं तथा आपने फ़िल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ़ इंडिया, पुणे से सिनेमेटोग्राफ़ी (निर्देशन) में डिप्लोमा किया है। आपको हिंदी, अंग्रेज़ी संस्कृत, बाङ्ला, फ्रांसीसी, जर्मन, रूसी, इतालवी, जापानी तथा स्पानी भाषाओं का भी ज्ञान है। आपने अपने कार्य–जीवन की शुरुआत गणित के शिक्षक के रूप में की तथा सन् 1977 से अद्यतन आप एक स्वतंत्र निर्देशक एवं निर्माता के रूप में कार्य कर रहे हैं। आपकी प्रकाशित कृतियों में *चित्रव्यूह एवं चलत्–चित्रव्यूह* नामक निबंध–संग्रह (2012) तथा *गुरुदत्त : तीन अंकी शोकांतिका* (1995) शामिल हैं, जिन्हें क्रमशः महाराष्ट्र फ़ाउंडेशन (अमेरिका) का पुरस्कार तथा सिनेमा पर लिखित सर्वश्रेष्ठ पुस्तक के रूप में राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हैं। आपकी पुस्तकों के अनुवाद विभिन्न विदेशी एवं भारतीय भाषाओं में भी प्रकाशित हुए हैं। आप द्वारा निर्मित फ़िल्मों में 'फ़िगर्स ऑफ़ थॉट' (1991), 'संचारी' (1992), 'कथा दौन गनपतरावंची' (1994), 'कलर्स ऑफ़ एब्सेंस (1994), 'सोच समझ के' (1996), 'रसिकप्रिया' (2001), 'नारायण गंगाराम सुर्वे' (2003), 'हाथी का अंडा' (2004) तथा 'वाल्यूम ज़ीरो : द वर्क ऑफ़ चार्ल्स कोर्रो' (2009) शामिल हैं। आपकी फ़िल्मों में से अनेक को विभिन्न राष्ट्रीय फ़िल्मोत्सवों की विभिन्न श्रेणियों में सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार प्राप्त हैं। आपको सत्यजित रे स्मारक आजीवन उपलब्धि पुरस्कार के अलावा कला फ़िल्मों में योगदान के लिए थर्ड आई इंटरनेशनल फ़िल्मोत्सव 2015 में पुरस्कृत किया जा चुका है।

पुरस्कृत कृति *चलत्–चित्रव्यूह* अरुण खोपकर कृत मराठी संस्मरण–संग्रह है। इस संग्रह के अंतर्गत समकालीन भारत के प्रतिष्ठित कलाकारों का जीवनवृत्त तथा समालोचना सम्मिलित है। यह संग्रह कला समीक्षा तथा मराठी में तुलनात्मक अध्ययन को एक बहुमूल्य योगदान है। लेखक ने उत्कृष्ट शैली में विभिन्न कलाओं के सांस्कृतिक महत्त्व के प्रति अपनी विशुद्ध प्रतिबद्धता को प्रकट किया है। यह कृति मराठी में लिखित भारतीय संस्मरण साहित्य को एक महत्त्वपूर्ण योगदान मानी गई है।

परिवार के साथ

Award in Marathi to
**Arun Khopkar**
(Born in 1945)

Renowned Marathi writer, Arun Khopkar is an internationally acclaimed film-maker, film scholar, teacher and actor. He is an acknowledged authority worldwide on the aesthetic theories of Sergei Eisenstein. He has contributed to national and international seminars and published papers on film aesthetics in various national and international journals. His films on arts and various art forms are very well-known and many of his films on art forms like music, dance, painting, architecture and literature have won national and international awards.

Born in 1945, Arun Khopkar completed his B.Sc. (Hons) from the University of Bombay and taught Mathematics at Elphinstone College for few years before moving on to Pune to pursue cinematography. His films, *Figures of Thought (1991), Sanchari (1992), Katha Doan Ganapatraonchi (1994), Colours of Absence (1994), Soch Saaj Ke (1996), Rasikrpiya (2001), Narayan Gangaram Surve (2003), Haathi ka Anda (2004)* and *Volume Zero: The Work of Charles Correa* were received with rave reviews.

His books *Chitravyooh* and *Chalat Chitravyooh* received the Maharashtra Foundation (USA) award for the most original work in Marathi in 2015, while his *Guru Dutt: Teen Anki Shokantika* won the national Award for the best book on cinema in 1996. In his illustrious career, Arun Khopkar also received Satyajit Ray Memorial Lifetime Achievement Award for his contribution to the films. Besides Marathi, Arun Khopkar knows English, Hindi, Sanskrit, French, German, Russian, Italian and Bengali.

The Award-winning title, *Chalat Chitravyooh,* is a collection of twelve essays in the form of memoirs and appreciation of renowned artists of contemporary India. The book is a valuable addition to art criticism and comparative studies in Marathi. *Chalat Chitravyooh,* reveals the deep commitment of the author to the cultural values of various arts and as such is considered an important contribution to the genre of memoirs in Marathi.

**Receiving National Award from Dilip Kumar in 1996**

नेपाली में पुरस्कृत

**गुप्त प्रधान**

(जन्म : 1945)

गुप्त प्रधान नेपाली के सुपरिचित कथाकार और आलोचक हैं। अपनी कहानियों के माध्यम से जहाँ आपने नेपाली जनजीवन के संघर्ष और सरोकारों को वाणी दी है, वहीं अपनी आलोचनात्मक एवं संपादित कृतियों के माध्यम से नेपाली साहित्य के अनुद्घाटित पृष्ठों को उजागर किया है।

गुप्त प्रधान का जन्म 1945 में ब्लूम फ़ील्ड, दार्जीलिङ में हुआ। आपने कला स्नातक तथा शिक्षा स्नातक की उपाधियाँ प्राप्त की हैं। आपको अंग्रेज़ी और हिंदी भाषाओं का भी ज्ञान है। आपने अपने कार्य–जीवन की शुरुआत 1970 में शिक्षक के रूप में की। आपने कक्षा 8 से लेखन प्रारंभ किया, लेकिन आपकी पहली रचना 1965 में प्रकाशित हुई। आपकी प्रकाशित कृतियों में *विस्थापन* (1977), मांछे : *मांछेकइ बस्ती भित्र* (1980), *आकाशराई अक्षर को शहर* (1993) एवं *विराम चिन्हहरू* (2002) नामक कहानी–संग्रह तथा *धूमिल पृष्ठहरू, मन बहादुर गुरूंग–उनका आफनाइ छविहरूमा* तथा *कृति अनि स्मृतिहरूमा शरद छेत्री* नामक आलोचना कृतियाँ प्रमुख हैं। आप स्रष्टा पुरस्कार, दियालो पुरस्कार, पारसमणि पुरस्कार, अरूगी पुरस्कार, नेपाली साहित्य सम्मेलन पुरस्कार आदि पुरस्कार सम्मानों से विभूषित हैं। आपकी रचनाओं पर आधारित फ़िल्मों का निर्माण भी हुआ है।

पुरस्कृत कृति *समयका प्रतिविम्बहरू* गुप्त प्रधान कृत नेपाली कहानी–संग्रह है। इस संग्रह की कहानियाँ मानव मन की जटिलताओं से लेकर ग्रामीण यथार्थ का चित्रण करती हैं। इनमें कहीं राजनीतिक व्यंग्य है तो कहीं छोटे से भूगोल को केंद्रीयता प्रदान करते हुए साधारण जनजीवन की जटिलताओं, आजीविका से जुड़ी समस्याओं तथा जीवन–अस्मिता के संघर्षों की अभिव्यक्ति है। आपकी कहानी कहने की कला इतनी उत्कृष्ट है कि पाठक एक और क्षण, एक और घंटे, एक और पृष्ठ तथा एक और घटना की प्रतीक्षा करता है। यह कृति नेपाली में लिखित भारतीय कथा साहित्य को एक महत्त्वपूर्ण योगदान मानी गई है।

परिवार के साथ

Award in Nepali to
**Gupta Pradhan**
(Born in 1945)

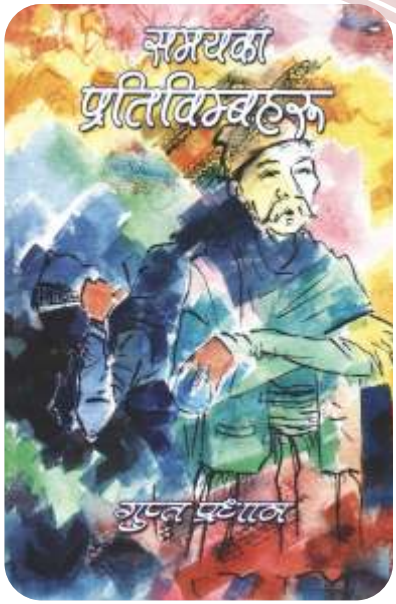


Gupta Pradhan is a very well-known nepali writer and critic. Through his stories he has managed to bring to the fore the many issues and concerns, trials and tribulations of the Nepalese people whereas through his critiques he has been able to illuminate the hitherto unknown aspects of Nepalese literature.

Gupta Pradhan was born in 1945 in Bloom Field, Darjeeling. He holds a B.A. in Arts and a B.Ed. Apart from Nepali, the languages known to him are Hindi and English. He started his career as an educationist in 1970. He started writing from standard Eighth onwards but he first published writing came out in 1965. Notable among his various published works are *Visthapan* (1977), *Maanche: Maanchekai Basti Bhitra* (1980), *Akashrai Akshar Ko Shahar* (1993) and *Viraam Chinharu* (2002)- all story collection. Among his critiques—*Dhoomil Pristharu, Man Bahadur Gurung—Unka Aafnai Chaviharuma* are prominent. He has been the recipient of several awards including Shrasta Puraskar, Diyalo Award, Parasmani Award, Arugi Award and Nepali Sahitya Sammelan Award. A few films have also been made on his writings.

Awarded book, *Samyaka Prativimbhaharu*, is a captivating collection of short stories. This book has a whole range of short stories that connect the social realities to the contradictions in the human mind, it highlights various socio-political aspects and how intricacies of livelihood unleash survival instincts in simple folk. All these themes and more decorate this fascinatingly produced collection. The writer is a seasoned story-teller and makes the reader wait for another moment, another hour, another page and another event. He has a distinctive style characterized by deep thinking and hypnotising plots in his narratives. As such, *Samyaka Prativimbhaharu* is a major contribution to the genre of short story in Nepali.

**Being felicitated by Nepali Sahitya Sammelan, Darjeeling in 2003**

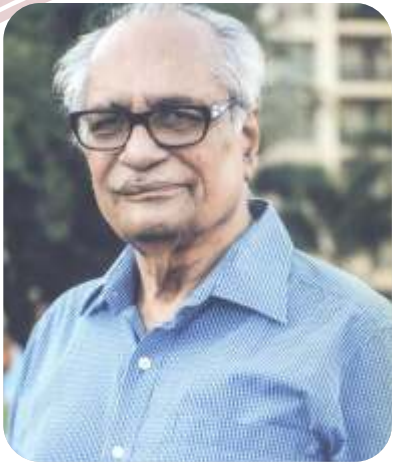

ओड़िया में पुरस्कृत

## विभूति पट्टनायक

(जन्म : 1937)

विभूति पट्टनायक बहुसर्जक ओड़िया कथाकार और आलोचक हैं। उपन्यास, कहानी, यात्रावृत्त तथा आलोचना की आपकी 150 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं। आप ओड़िया साहित्य के सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासकारों में से एक हैं। प्रेम, लैंगिक समानता, जातिविहीन समाज के सपने को अभिव्यक्त करने वाली आपकी रचनाएँ अनेक ओड़िया फ़िल्मों की प्रेरणा तो हैं ही, आपने ओड़िया भाषा एवं साहित्य की तीन पीढ़ियों को प्रेरित एवं प्रभावित किया है।

विभूति पट्टनायक का जन्म 1937 में ओड़िशा के जगतसिंहपुर ज़िले के दिंगेश्वर गाँव में हुआ। आपको अंग्रेज़ी, बाङ्ला और हिंदी भाषाओं का भी ज्ञान है। आपने इतिहास में स्नातकोत्तर तथा पी–एच.डी. उपाधियाँ प्राप्त की हैं। आपने अपने कार्य–जीवन का आरंभ 1970 में एक सरकारी कॉलेज में ओड़िया भाषा एवं साहित्य के व्याख्याता के रूप में किया तथा 1995 में आप बी.जे.बी. कॉलेज, भुवनेश्वर से रीडर के पद से सेवानिवृत्त हुए। आपका प्रथम उपन्यास *शेष बसंत* 1959 में प्रकाशित हुआ तथा आपकी प्रथम कहानी 'नारी ओ पुरुष' 1954 में एक साहित्यिक पत्रिका *झनकार* में प्रकाशित हुई। आप *संवाद* एवं *समय* नामक ओड़िया समाचार पत्रों के नियमित स्तंभ लेखक रहे हैं तथा संप्रति *प्रगतिवादी* दैनिक में स्तंभ लेखन के अलावा *गल्प : एकविंश शताब्दीर* नामक त्रैमासिक पत्रिका के संपादक हैं। आपके कुछ उल्लेखनीय उपन्यास निम्नांकित हैं :*बधू निरुपमा* (1965), *अश्वमेधर घोड़ा* (1983), *असवर्ण* (1987), *सती असती* (1979) और *छबिर मनीषा* (1980)। आपको ओड़िशा साहित्य अकादमी पुरस्कार, बिसुवा पुरस्कार, सरळा पुरस्कार आदि सम्मानों से विभूषित किया गया है। आपकी कहानी पर बनी फ़िल्म 'मायामृग' को रजत कमल पुरस्कार प्राप्त हुआ है। *छबिर मनीषा* पर निर्मित टेलीफ़िल्म को फ़िल्म क्रिटिक पुरस्कार प्राप्त है।

पुरस्कृत कृति *महिषासुरर मुँह* विभूति पट्टनायक की 26 ओड़िया कहानियों का संग्रह है। कहानियों में आधुनिक जीवन की संवेदना, गुस्सा, विडंबना और विद्रोह को लेखक ने अपनी विशिष्ट भाषा और मुहावरों में संप्रेषित किया है। आप हमारे समय के एक सर्वश्रेष्ठ क़िस्सागो हैं। आलोचनात्मक टिप्पणियों की परवाह न करते हुए लेखक ने किसी नवीन शैली का सूत्रपात अथवा अनुसरण करने की बजाय पारंपरिक आख्यान शैली का ही निर्वहन किया है, जिसे पाठकों की व्यापक स्वीकृति मिली है। यह कृति ओड़िया में लिखित भारतीय कथा साहित्य को एक महत्त्वपूर्ण योगदान मानी गई है।

परिवार के साथ

Award in Odia to
**Bibhuti Pattanaik**
(Born in 1937)

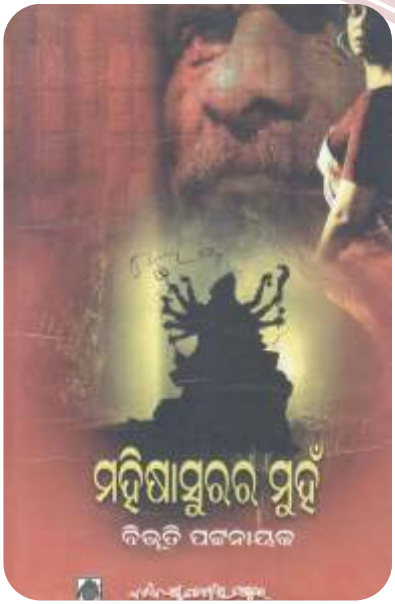


Bibhuti Pattanaik is, unquestionably, a living legend of Odia fiction who continues to stride the world of popular Odia fiction like a colossus for almost five decades. He is one of the most cherished novelists of Odia literature. He has published more than 150 books in the genres of novel, short-story, travelogue and critique. Virtually, two generations of fiction-writers and the youth have availed from his romantic-socialist arsenal the metaphors of love, deceit, oppression and ideology, not to speak of genial bohemianism and anachronistic rural fatalism.

He was born in 1937 in district Jagatsinghpur in Odisha. He holds a doctorate and the languages known to him apart from Odia, are English, Bengali and Hindi. He started his career as a lecturer in Odia language and literature in Government College in 1970 and retired as a Reader in 1995 from B.J.B. College, Bhubaneswar. His first novel *Sesha basanta* was published in the year 1959 and his first story "Naari O Purush" was published in the literary journal *Jhankaar*. He has been a columnist in the Odia daily *Sambaad* and *Samaya* and still writes a column in the daily *Pragativaadi*. He also edits an Odia short story quarterly *Galpa: Ekabinsha Satabdira*. Some of his notable works are *Badhu Nirupama* (1965), *Aswamedhara Ghoda* (1983), *Asabarna* (1982), *Sati Asati* (1979) and *Chhabira Manisha* (1980). He has been honoured with the Odisha Sahitya Akademi Award, Bisuva Award, Sarala Award, Sahitya Bharti Award among various others.

The awarded book, *Mahishasurara Muhan*, is a collection of short stories where we find the author is recreating his vintage idiom of anger, irony and romance, artistically concealed beneath a taut storyline. He has refused to toe the line of the new or the avant garde while he has gone on with his conventional narrative unmindful of the critics' rebuke, enjoying the warmth of his enormous popularity. As such, *Mahishasurara Muhan* is a major contribution to the genre of short story in Odia.

**Receiving the Sahitya Bharti Award from Murlidhar Chandrakant Bhandare, Governor of Odisha in 2007**

पंजाबी में पुरस्कृत

## जसविन्दर सिंह

(जन्म : 1954)

जसविंदर सिंह पंजाबी के प्रतिष्ठित कथाकार और आलोचक हैं। आपकी कहानियों में पंजाबी जनजीवन की यथार्थाभिव्यक्ति है तथा आलोचना कृतियों में साहित्य सिद्धांतों के साथ–साथ साहित्य के सांस्कृतिक अध्ययन का प्रयास मिलता है।

जसविन्दर सिंह का जन्म 1954 में पंजाब के जालंधर ज़िला में स्थित उमरवाल बिल्ला गाँव में हुआ। आपने अंग्रेज़ी में एम.ए. तथा पी–एच.डी. उपाधियाँ प्राप्त की हैं। आपको हिंदी भाषा का भी ज्ञान है। आपने 36 वर्षों तक विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य किया। आपने 1976 से लेखन प्रारंभ किया। आपकी प्रकाशित कृतियों में *खूह खाते* (1996) और *घर दा जी* (2004) नामक कहानी–*संग्रह तथा सभ्याचार अते किस्सा काव, पंजाबी लोक साहित शास्तर, पंजाबी सभ्याचार : पाषाण चिन्ह एवं संत सिंह शेखों जीवन ते रचना* नामक आलोचना कृतियाँ प्रमुख हैं। आपकी रचनाएँ दिल्ली विश्वविद्यालय, पंजाबी विश्वविद्यालय, पंजाब विश्वविद्यालय एवं कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय सहित विभिन्न विश्वविद्यालयों के स्नातक एवं स्नातकोत्तर और स्कूल बोर्डों के पाठ्यक्रमों में शामिल हैं। आपको शिरोमणि पंजाबी लेखक/आलोचक पुरस्कार, करतार सिंह धालीवाल पुरस्कार, डॉ. दलजीत सिंह मेमोरियल पुरस्कार, तेजा सिंह पुरस्कार आदि सम्मानों से विभूषित किया गया है।

पुरस्कृत कृति *मात लोक* जसविन्दर सिंह कृत पंजाबी उपन्यास है। यह उपन्यास उस उथल–पुथल को अभिव्यक्त करता है, जिसे पंजाब ने 80 के दशक के अंत में अनुभव किया था। आपने जिस प्रकार घटनाओं का चित्रण किया है, वह कलात्मक तथा यथार्थ के निकट है। आपने साधारण मनुष्य की अव्यक्त इच्छाओं को प्रकट करने के लिए विभिन्न कथा तकनीकों का प्रयोग किया है। यह कृति पंजाबी में लिखित भारतीय कथा साहित्य को एक महत्त्वपूर्ण योगदान मानी गई है।

परिवार के साथ

Award in Punjabi to
**Jaswinder Singh**
(Born in 1954)

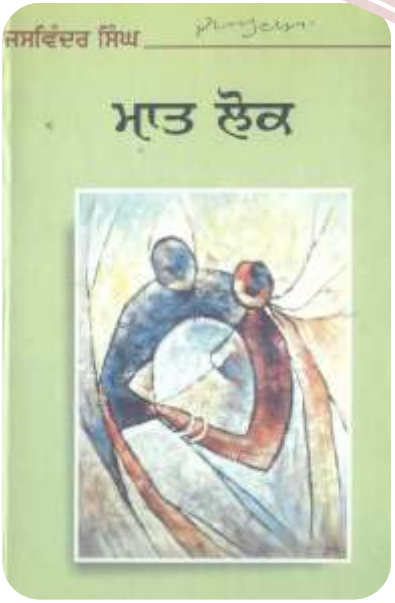


Jaswinder Singh is an acclaimed fiction writer and critic. His stories reflect a true and heart-warming picture of the collective consciousness and lifestyle of Punjab. His critiques have provided valuable insights into the ethos of contemporary society and genuinely contemplates on the issues of human existence.

Jaswinder Singh was born in 1954 in district Jalandhar in Punjab. He holds a Doctorate in English. Apart from Punjabi, he knows Hindi as well as English. He taught for 36 years. His writing career began in 1976. His published works include *Khooh Khaate* (1986), which won the Nanak Singh Award for best Book of Fiction, and *Ghar Da Jee* (2004) and *Maat Lok* (2011). *Maat Lok* apart from being the winner of Sahitya Akademi Award, is a part of syllabus in M.A. (Punjabi), Kurukshetra University. His short stories have been translated into Hindi and English and published in various national and international magazines. Many of his short stories have been dramatized and serialized by Doordarshan Kendra, Jallandhar and have also been enacted by various theatre groups. Among the various honours bestowed on him are Dr. Daljit Singh Memorial Award (2002), Kartar Singh Dhaliwal Puraskar (2007) and Shiromani Punjabi Lekhak Alochak Puraskar (2008).

The awarded book, *Maat Lok*, is about the turmoil which Punjab had experienced in the late eighties of the last century. The writer's description of the incidents is artistic and close to reality. He has used different narrative devices to manifest the latent desire of human beings. As such, *Maat Lok* is a major contribution to the genre of the Indian novel in Punjabi.

**With Sardar Prakash S. Badal, CM of Punjab, Dr. Jaspal Singh, Dr. J.S. Grewal and Dr. P.S. Kapoor releasing the 'The Gadar Movement' on the Centenary celebrations of Gadar Movement - 2013**

राजस्थानी में पुरस्कृत

## मधु आचार्य 'आशावादी'

(जन्म : 1960)

मधु आचार्य 'आशावादी' प्रतिष्ठित राजस्थानी कथाकार और रंगकर्मी हैं। हिंदी पत्रकारिता से संबद्ध 'आशावादी' की गणना ज़मीन से जुड़े हुए पत्रकारों में होती है। नाट्य लेखन, अभिनय और निर्देशन का आपका अनुभव पत्रकारिता से भी पुराना है।

मधु आचार्य 'आशावादी' का जन्म 1960 में बीकानेर, राजस्थान में हुआ। आपने एम.ए. तथा एल. एल.बी. की उपाधियाँ प्राप्त की हैं। आप पेशे से पत्रकार हैं और पिछले 12 वर्षों से *दैनिक भास्कर* नामक समाचार पत्र के बीकानेर संस्करण के प्रधान संपादक हैं। दैनिक स्तंभ के रूप में किया गया आपका लेखन बाद में *भारत के स्वाधीनता संग्राम में बीकानेर का योगदान* शीर्षक से पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ। मो. सादिक़ की कविता पर आधारित आप द्वारा लिखित राजस्थानी नाटक *अंतस उजास* 1955 में प्रकाशित हुआ था। रंगकर्म से आपका गहरा जुड़ाव है तथा आप राजस्थान संगीत अकादमी, जोधपुर के उपाध्यक्ष रहे हैं। आपको हिंदी तथा अंग्रेज़ी भाषाओं का भी ज्ञान है। आपके उपन्यास *गवाड़* का एक अंश एमजीएस यूनिवर्सिटी, बीकानेर के स्नातक, प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम में भी शामिल है। आपको संगीत नाटक अकादमी जोधपुर पुरस्कार (2007), पत्रकारिता के लिए शंभु शेखर सक्सेना पुरस्कार तथा मुरलीधर व्यास राजस्थानी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

पुरस्कृत कृति *गवाड़* मधु आचार्य 'आशावादी' कृत राजस्थानी उपन्यास है, जो अपनी विधागत संरचना में एक विलक्षण और चित्ताकर्षक प्रयोग है। उपन्यास के परंपरा–रूढ़ ढाँचे अथवा उसके दोहराव से यह उपन्यास अछूता है। चरित्रों के 'कोलाज' से एक ऐसा प्रच्छन्न कथासूत्र पिरोया गया है, जो उपन्यास विधा की एक नई प्रस्तावना प्रस्तुत करता है। राजस्थानी उपन्यास में यह एक नवीन सूत्रपात और ताज़गी के झोंके जैसा जान पड़ता है। यह कृति राजस्थानी में लिखित भारतीय कथा साहित्य को एक महत्त्वपूर्ण योगदान मानी गई है।

परिवार के साथ

Award in Rajasthani to
**Madhu Acharya 'Ashawadi'**
(Born in 1960)

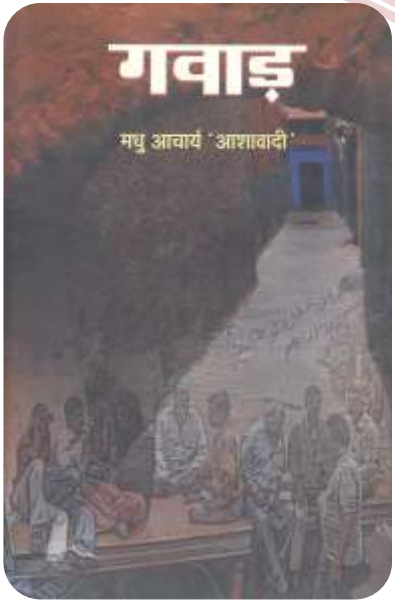


Madhu Acharya 'Ashawadi' is noted Rajasthani writer and theatre activist and a well-known name in Hindi journalism.

He was born in the year 1960 at Bikaner, Rajasthan. He holds an M.A. and an L.L.B. degree. The languages known to him are Rajasthani, Hindi and English. He started his career as a journalist with the daily newspaper *Dainik Bhaskar*. He has been the Editor-in-Chief for it's Bikaner Edition for the last 12 years. He began his literary journey with a Rajasthani play, *Antus Ujas*, which was based on the poetry of Mohd. Sadik. His major literary influence has been Mr. Nandkishore Acharya—a fine critic and poet and Dr. Arjun Dev Charan—an experimental director of modern India. The various awards and honours he has received include the Sangeet Natak Akademi Jodhpur Award, Shambhu Shekhar Saxena Award, Murlidhar Vyas Rajasthani Award for his novel *Gawaad*. He has also been the Vice-President of Rajasthan Sangeet Akademi, Jodhpur.

The awarded novel, *Gawaad*, adds a new dimension to the Rajasthani novel. It is a shift from the traditional world of the novel, thus breaking new ground in the literary vista. The collage of various characters bind the storyline in a beautiful and taut manner. This comes as a breath of fresh air for the readers. As such, *Gawaad* is a major contribution to the genre of the Indian novel in Rajasthani.

**Receiving the prestigious 'Shambhu-Shekhar Saxena Award'**

संस्कृत में पुरस्कृत

## रामशंकर अवस्थी

(जन्म : 1942)

रामशंकर अवस्थी एक बहुप्रातिभ संस्कृत लेखक हैं। आप एक कवि, कथाकार और मनीषी हैं। संस्कृत में आपकी मौलिक सृजनात्मक कृतियों की संख्या बीस से भी अधिक है। संस्कृत व्याकरण पर आपका असाधारण अधिकार है। आपने संस्कृत साहित्य में नई विधाओं और भावों की उद्‌भावना की है।

रामशंकर अवस्थी का जन्म 1942 में उत्तर प्रदेश के ज़िला कानपुर देहात में स्थित औनाहन गाँव में हुआ। आपने हिंदी एवं संस्कृत में स्नातकोत्तर तथा पी–एच.डी. की उपाधियाँ प्राप्त की हैं। आपको हिंदी तथा अंग्रेज़ी भाषाओं का भी ज्ञान है। आपने 23 वर्षों तक संस्कृत के व्याख्याता के रूप में कार्य किया। आपकी प्रथम कृति *बलिदान* (हिंदी महाकाव्य) 1974 में प्रकाशित हुई। आपकी प्रकाशित कृतियों में *आहुतिःस्वातंत्र्ययज्ञे, चिद्‌विलास, कारगिलयुद्धम, दामिनीपर्यस्फुरत्* (महाकाव्य); *रात्रिर्गमिश्यति, अजीज़नबाई, विक्रमादित्यदायादाः* (खंडकाव्य); *यामिनी यस्यति* (गीतिकाव्य), *हिमादिशतकम्* (मुक्त काव्य); *सुदर्शन चरितम्, विश्वामित्रम्* (नाटक), *सीतावनवास, धरनीबंध* (गद्यकृति); *तरंगिणी, परिमल* (कथा–संग्रह) तथा *जीवनस्मृति* (आत्मकथा) नामक संस्कृत कृतियाँ और *श्रीरामगाथा, लोकमंगल* (महाकाव्य); *शबरी* (खंडकाव्य) तथा *तरंग* (काव्य–संग्रह) नामक हिंदी कृतियाँ शामिल हैं। आपकी कृतियों के लिए आपको उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, दिल्ली संस्कृत अकादमी, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, साक्षीचेता जनसेवा संस्थान कानपुर तथा हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के विभिन्न पुरस्कार–सम्मानों से विभूषित किया गया है।

पुरस्कृत कृति *वनदेवी* रामशंकर अवस्थी कृत संस्कृत महाकाव्य है, जो रामायण की सीता के जीवन एवं चरित्र से सरोकार रखता है। कवि ने युगों पुराने विषय पर दोबारा ग़ौर करते हुए एक नवीन परिदृश्य के साथ सीता के चरित्र को समसामयिक अर्थ प्रदान किया है। भाषा तथा शब्द–योजना का समुचित निर्वाह करते हुए लेखक ने मुहावरों का सटीक एवं उत्कृष्ट प्रयोग किया है तथा स्त्री विमर्श को नई संवेदना दी है। यह कृति संस्कृत में लिखित भारतीय काव्य को एक महत्त्वपूर्ण योगदान मानी गई है।

परिवार के साथ

Award in Sanskrit to
**Ram Shanker Awasthi**
(Born in 1942)

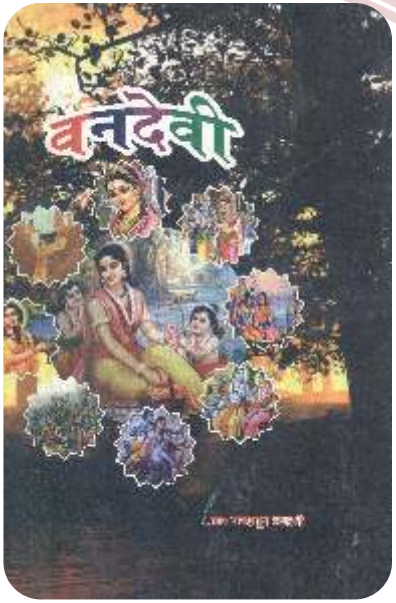


Ram Shanker Awasthi is a versatile Sanskrit writer. He is a poet, short story writer and a scholar with a standing of his own. He has produced more than twenty volumes of original, creative writing in Sanskrit.

He was born in 1942 in Kanpur, Uttar Pradesh. He holds a Ph.D. in Sanskrit and had an illustrious career as a lecturer in the Sanskrit language. Apart from Sanskrit the languages known to him are Hindi and English. He has written in Sanskrit including poetry, plays, stories, Grammar and his autobiography. Some of his noted books are *Chidvilas, Vandevi, Suryasen, Himadrishatakam*. His plays include *Vishwamittram, Sudarshan Charitam, Devichandraguptam*. His story collection includes Tarangini and Parimal. He has a keen interest in theatre. The honours bestowed upon him include Vividh Puruskar, Banbhatta Puruskar and Vishisht Puraskar from Uttar Pradesh Sanskrit Sansthan, Lucknow. He won the Panditraj Ganganath Sanskrit Padya Rachna Puraskar four times from Delhi Sanskrit Academy, the Tulsi Puraskar twice from the Uttar Pradesh Hindi Sansthan, the Manas Sangam Vishist Samman and the Vagvidamvar Samman.

His awarded book, *Vandevi*, is an epic poem dealing with the life and character of Sita from the Ramayana. The author has re-visited the age-old theme and has given contemporary interpretation to Sita's character from a modern perspective. With an excellent command over language he also exhibits a mastery over idiom and a sensitivity to female discourse. As such, *Vandevi* is considered as an important contribution to the genre of the epic poem in Sanskrit.

**Being felicitated by
(late) Acharya Vishnu Kant Shastri,
former Governor of Uttar Pradesh**

संताली में पुरस्कृत

## रबिलाल टुडु

(जन्म : 1949)

रबिलाल टुडु संताली के प्रमुख नाटककारों में से एक हैं। आपने अपने नाटकों के माध्यम से संताल जनजाति और संताली भाषा के संघर्ष और अस्मिता को स्वर दिया है। संताली भाषा–साहित्य की समृद्धि के लिए आपने कुछ बाङ्ला नाटकों के अनुवाद भी किए हैं।

रबिलाल टुडु का जन्म 1949 में पश्चिम बंगाल के बर्दवान ज़िला में स्थित नौराह गाँव में हुआ। आप विज्ञान स्नातक हैं। आपको बाङ्ला, अंग्रेज़ी तथा हिंदी भाषाओं का भी ज्ञान है। आपने अपने कार्य–जीवन की शुरुआत 1973 में की और 5 वर्षों बाद बैंक ऑफ़ इंडिया से संबद्ध हुए तथा 2009 में सेवानिवृत्त हुए। आपने विद्यार्थी–जीवन में लेखन प्रारंभ किया। आपकी प्रकाशित कृतियों में *बीर बिरसा, समाज बैरी, जन्म अयोय राराक काना, सिदु–कानुक मायम, मूरूख जाला* नामक संताली नाटक तथा *अल–बिदाव* ओनोरहे नामक कविता–संग्रह शामिल हैं। आपने बाङ्ला की अनेक कृतियों के संताली अनुवाद भी किए हैं, जो निम्नांकित हैं : *मा–ओ छेले* (संताली अनु. *मारै सगाई*), *अभिजात्य* (संताली अनु. *किंसारह गरब*) और *एकटि पैसा* (संताली अनु. *कानरहा कौड़ी)*। आपको *बीर बिरसा* के लिए पंडित रघुनाथ मुर्मु सम्मान तथा अखिल भारतीय संताली लेखक संघ एवं गुपी कन्हाई तिर्लागौंता द्वारा आजीवन उपलब्धि एवं संपूर्ण योगदान के लिए सम्मानित किया गया है।

पुरस्कृत कृति *पारसी खातिर* रबिलाल टुडु कृत संताली नाटक है, जो संताली भाषा की समकालीन धारणा पर आधारित है। लेखक ने विभिन्न चरित्रों के माध्यम से संताली भाषा से संबंधित विभिन्न संकटावस्थाओं को बड़े ही उपयुक्त ढंग से चित्रित किया है। यह नाटक संताली भाषा तथा समाज के उत्थान हेतु पाठकों को प्रभावित करने में पूर्ण रूप से सक्षम है। भाषा की अभिव्यक्ति सचमुच प्रभावशाली है। यह कृति संताली में लिखित भारतीय नाट्य साहित्य को एक महत्त्वपूर्ण योगदान मानी गई है।

परिवार के साथ

Award in Santali to
**Rabi Lal Tudu**
(Born in 1949)

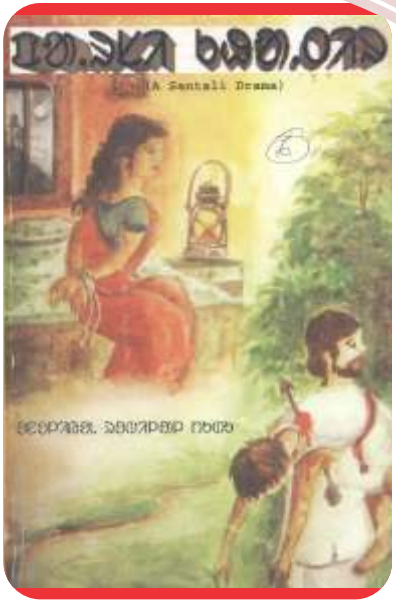

Rabi Lal Tudu is an eminent Santali writer who has made a seminal contribution to the growth of Santali literature. He is a playwright par excellence who invests life in his characters and espouses the cause of the development of the human race through the finest ideals.

He was born in 1949 in Burdwan, West Bengal. He holds a B.Sc. from Burdwan University. Apart from Santhali, the languages known to him are Bengali, English and Hindi. He is a banker by profession. He started writing from his school days and later contributed many poems, write-ups for various magazines. He wrote Santali dramas for proscenium productions and as well as for All India Radio. His published work includes translation of the Bengali drama *Ma-o-Chhele* as *Mare Sagai* and *Ekti Paisa* as *Kanrha Kaudi* into Santali. The awards and honours he has received include Bir Birsa his drama was awarded by BMS Jamshedpur, Lifetime Achievement Award by All India Santali Writers' Association, West Bengal for total contribution to Santali literature.

*Parsi Khatir,* his awarded play, is based on contemporary issues. He has aptly focused on the crisis surrounding the Santali language. It is capable of influencing the readers and to inspire them to work towards the development of language and society. His language is lucid and impressive. As such, *Parsi Khatir* is considered as a major contribution to the genre of Indian drama in Santali.

सिंधी में पुरस्कृत

## माया राही

(जन्म : 1939)

माया राही प्रतिष्ठित सिंधी कथालेखिका हैं, जिन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से सिंधी समुदाय के साथ–साथ अन्य समुदायों की समस्याओं और चुनौतियों को भी उजागर किया है। अत्याधुनिक भावबोधों की वकालत करते हुए भी वे पारंपरिक जीवन मूल्यों का समादर करती हैं।

माया राही का जन्म 1939 में क्यूएटा, बलूचिस्तान, पाकिस्तान में हुआ। आपने स्नातकोत्तर, बी. एड. और साहित्यरत्न की उपाधियाँ प्राप्त की हैं। आपको हिंदी, अंग्रेज़ी, गुजराती तथा मराठी भाषाओं का भी ज्ञान है। आपने 38 वर्षों तक अध्यापन कार्य किया तथा पी. जी. गरोड़िया हाई स्कूल, मुंबई के हिंदी विभागाध्यक्ष के रूप में सेवानिवृत्त हुईं। आपने 18 वर्ष की उम्र में लेखन प्रारंभ किया। आपकी प्रकाशित कृतियों में *मुहब्बत जो मींहु, मोक्ष, अहसास तथा ढाल* शामिल हैं। हिंदी में भी आपका एक कहानी–संग्रह *और वह उदास हो गए* प्रकाशित है। आपको शिक्षा के क्षेत्र में किए गए उल्लेखनीय कार्य के लिए लॉयंस क्लब ऑफ़ बॉम्बे द्वारा सराहना प्रमाण–पत्र प्रदान किया गया है।

पुरस्कृत कृति *महँगी मुरक* माया राही कृत सिंधी कहानी–संग्रह है। लेखिका ने आधुनिक समाज से पात्रों को चुनकर अपनी कहानियों का ताना–बाना बुना है। संग्रह की कुछ कहानियाँ आधुनिक एवं उत्तर–आधुनिक शैली पर आधारित हैं। पुरानी परंपराओं के विरुद्ध नई धारणाओं को ग्रहण करने की वकालत करते हुए लेखिका ने सरल, सरस एवं स्पष्ट भाषा में नवीन संवेदनाओं को स्वर दिया है। यह कृति सिंधी में लिखित भारतीय कथा साहित्य को एक महत्त्वपूर्ण योगदान मानी गई है।

साथी लेखकों के साथ

Award in Sindhi to
**Maya Rahi**
(Born in 1939)

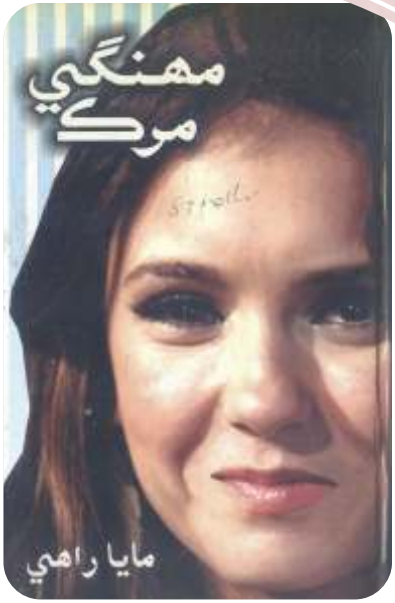


Maya Rahi is a renowned Sindhi writer who through her writings has contributed to the development of Sindhi literature. She has brought to the fore the sensibilities and the issues and challenges facing her community in a sensitive manner. She is a votary of development but not at the cost of the traditional value system.

She was born in 1939 in Quetta, Balochistan (now in Pakistan). She holds an M.A. degree along with a Bachelors in Education and Sahitya Ratan. Apart from Sindhi the languages known to her are Hindi, English, Gujarati and Marathi. Her career as a teacher spanned 38 years and she retired as the H.O.D. of the Hindi Department at P. G. Garodia High School, Mumbai. She started writing at the age of 18 years. She has been influenced by Hindi literature. Her published work includes *Mohabbat Jo Mehen, Moksh, Ahsaas* and *Dhaal*. A short story collection of hers has been published in Hindi as well. She has been the recipient of a Certificate of Appreciation from the Lions Club of Bombay for her services in the field of Education.

Her awarded book, *Mahingi Murk*, a collection of short stories is a highly appreciable work where the writer has advocated new systems of thought against age-old traditions. She displays a new sensibility with respect to human values. As such, *Mahingi Murk* is a major contribution to the genre of short stories in Sindhi.

**With famous Sufi Singer Abida Parveen**

तमिऴ में पुरस्कृत

**आ. माधवन**

(जन्म : 1934)

आ. माधवन तमिऴ के वरिष्ठ साहित्यकार हैं। आपने अपने लेखन के माध्यम से तमिऴ उपन्यास के पारंपरिक शिल्प को खंडित कर उसे एक नई धारा प्रदान की है। आपकी रचनाओं में त्रिवेंद्रम के चलाई बाजार नामक क़स्बे के जनजीवन का विशिष्ट अंकन मिलता है।

आ. माधवन का जन्म 1934 में तिरुवनंतपुरम में हुआ। आपने आर्थिक तंगी के चलते केवल दसवीं कक्षा तक शिक्षा ग्रहण की। आपको मलयाळम् तथा अंग्रेज़ी भाषाओं का भी ज्ञान है। आपने 1940 के दशक के उत्तरार्द्ध में लेखन प्रारंभ किया। आप द्रविड़ आंदोलन से बेहद प्रभावित रहे। आपकी समाज–सेवा एवं पत्रकारिता में गहरी रुचि है। आप त्रिवेंद्रम तमिळ संगम के संस्थापक एवं दो दशकों से ज़्यादा समय तक इसके अध्यक्ष रहे हैं। आप बीस वर्षों तक इसकी साहित्यिक पत्रिका *केरल तमिऴ* के प्रधान संपादक भी रहे तथा संप्रति इसके संपादकीय परामर्शदाता हैं। आपकी प्रकाशित कृतियों में *पुनअलुम मनलाउम, कृष्णा परुंथू, तूवनम* नामक उपन्यास; *इट्टावातथु नल* तथा *कलाई समस्त* नामक उपन्यासिकाएँ तथा *मोह पल्लवी कामिनी मूलम, अनाई चंथम* तथा *अरेबिया कुथिराई* नामक कहानी–संग्रह शामिल हैं। आपने अनेक मलयाळम् कृतियों का तमिऴ अनुवाद भी किया है। आपकी रचनाएँ तमिलनाडु और केरल के अनेक विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में शामिल हैं तथा आपकी अनेक कृतियों के अनुवाद हिंदी, अंग्रेज़ी तथा मलयाळम् भाषाओं में हुए हैं। आपको कलाइ ममानी, केरल राज्य सम्मान, महाकवि उल्लूर परमेश्वर अय्यर मेमोरियल पुरस्कार, तिरुप्पुर तमिऴ संगम पुरस्कार आदि अनेक पुरस्कार–सम्मानों से विभूषित किया जा चुका है।

पुरस्कृत कृति *इलक्किय चुवडुकळ* आ. माधवन कृत तमिऴ निबंध–संग्रह है, जो पिछले 50 वर्षों में लिखे गए साहित्य के विशाल परिसर की पड़ताल करता है। संकलित निबंध साहित्य के क्षेत्र में उभरती नवीन प्रवृत्तियों से सरोकार रखता है और तमिऴ, मलयाळम्, कन्नड तथा अंग्रेज़ी भाषा के विशिष्ट लेखकों का मूल्यांकन करता है। लेखक ने मौलिक साहित्य से जुड़े अपने प्रयोगों तथा अनुभवों को रेखांकित किया है, साथ ही तुलनात्मक साहित्य का भी गहन अध्ययन प्रस्तुत किया है। सामान्य रूप में, आपने समकालीन साहित्यिक इतिहास को संक्षेप में प्रस्तुत किया है। सभी निबंध साहित्यिक आलोचना के कई मुद्दों पर नवीन रोशनी डालते हैं। यह कृति तमिऴ में लिखित भारतीय निबंध साहित्य को एक महत्त्वपूर्ण योगदान मानी गई है।

परिवार के साथ

Award in Tamil to
**Aa. Madhavan**
(Born in 1934)

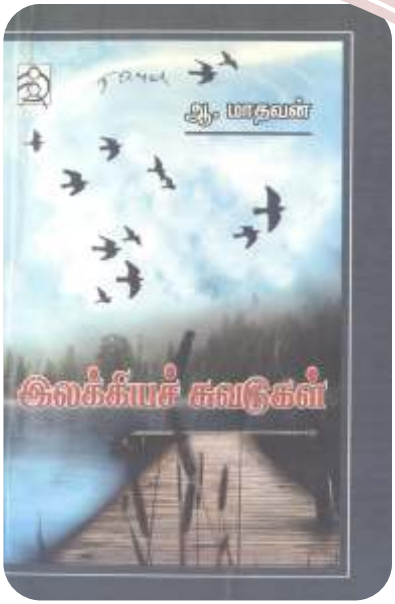


Aa. Madhavan is an icon of Tamil literature. His writings have influenced generations and he has opened up new literary vistas. He is well known as a creative and realistic literary writer, translator, journalist, literary critic, humanitarian and a linguistic craftsman.

He was born in 1934 in Thiruvananthapuram, Kerala. Though he could study only upto standard X due to financial constraints, his literary bent of mind ensured that it did not become a liability. A voracious reader, he was influenced by the major Russian, French and English writers and read their translations in Malayalam. The languages known to him are Tamil, Malayalam and English and he began writing in the late 1940's. He was influenced by the Dravidian movement. He is deeply interested in social service and journalism. He is the founder of Trivandrum Tamil Sangam and was its president for over 20 years. He was also the Chief Editor of *Kerala Tamil*. He has instituted 'A. Madhavan Literary Endowment' at the Trivandrum Tamil Sangam for the promotion of literary writing and awareness of creative literature among the next generation in Tamil, particularly in Kerala. He is a prolific writer who has won a plethora of awards including Kalai Mamani, Kerala State Honour, Chirukathai Chelvar, Vishnupuram, among many others. His prominent works are *Punalum Manalum (1974), Krishna Parunthu (1980), Kadaitheru Kathaikal (1974), Ilakkkya Chuvadukal* and *A. Madhavan Kathaikal*.

His awarded book, *Ilakkiya Suvadukal,* is a collection of critical essays which showcase the contemporary literary history in a nutshell. He has evaluated individual authors in Tamil, Malayalam, Kannada and English. These essays throw a refreshing light on the many aspects of literary criticism. As such, *Ilakkiya Suvadukal* is an important contribution to the genre of literary criticism in Tamil.

**With Nellai S.Muthu, Mani Ratnam, Punathil Kunjhabdulla, Nanjil Naadan, Jayamohan and Veda Sahaya Kumar**

तेलुगु में पुरस्कृत

## वोल्गा

(जन्म : 1950)

वोल्गा प्रतिष्ठित तेलुगु कथा–लेखिका, आलोचक, पटकथाकार और स्त्रीविमर्शकार हैं। भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति, चुनौतियों, संघर्षों और सरोकारों को रचनात्मक, वैचारिक और व्यावहारिक स्तर पर अभिव्यक्ति देनेवालों में आप अग्रणी हैं।

वोल्गा (मूल नाम : ललिता कुमारी पोपुरी) का जन्म 1950 में गुंटूर में हुआ। आपने आंध्र विश्वविद्यालय से तेलुगु साहित्य में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। आपको अंग्रेज़ी और हिंदी भाषाओं का भी ज्ञान है। आपने अपने कार्य–जीवन का प्रारंभ वी.एस.आर. एंड एन.वी.आर. कॉलेज, तेनाली, आंध्र प्रदेश में तेलुगु के व्याख्याता के रूप में किया। संप्रति, आप अस्मिता रिसोर्स सेंटर फ़ॉर वीमेन, सिकंदराबाद की कार्यकारी अध्यक्ष हैं। आपने 1969 में लेखन प्रारंभ किया। कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, आलोचना आदि विधाओं में आपकी मौलिक संपादित, अनूदित कृतियों की संख्या 40 से भी अधिक है। आपकी रचनाओं एवं कृतियों के अनुवाद हिंदी, अंग्रेज़ी, मराठी, कन्नड, तमिळ, ओड़िया, मलयाळम् और नेपाली भाषाओं में प्रकाशित हैं। आपने अनेक तेलुगु फ़ीचर फ़िल्मों, लघु फ़िल्मों और दूरदर्शन धारावाहिकों की पटकथाएँ लिखी हैं। आपको आंध्र प्रदेश सरकार का नंदी पुरस्कार, रंगावल्ली स्मृति पुरस्कार, रामिनेनी फ़ाउंडेशन पुरस्कार, डॉ. वासीरेड्डी सीता देवी पुरस्कार, सुशीला नारायण रेड्डी पुरस्कार, मालती चंदूर साहित्यिक पुरस्कार आदि अनेक पुरस्कार–सम्मानों से विभूषित किया गया है।

पुरस्कृत कृति *विमुक्त* वोल्गा कृत तेलुगु कहानी–संग्रह है, जो वर्तमान काल के पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं की व्यथा को प्रतिबिंबित करता है। रामायण की पृष्ठभूमि में, सीता का चरित्र सभी कहानियों का केंद्र बिंदु है। वाल्मीकि रामायण के उलट इस संग्रह की कहानियों में सीता और शूर्पणखा को अच्छी सहेलियों के रूप में दर्शाया गया है एवं उन्हें अधिक मानवतावादी दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत किया गया है। लेखिका की भाषा तथा शैली सरल, स्पष्ट तथा प्रभावशाली है। यह कृति तेलुगु में लिखित भारतीय कथा साहित्य को एक महत्त्वपूर्ण योगदान मानी गई है।

पति के साथ

Award in Telugu to
**Volga**
(Born in 1950)

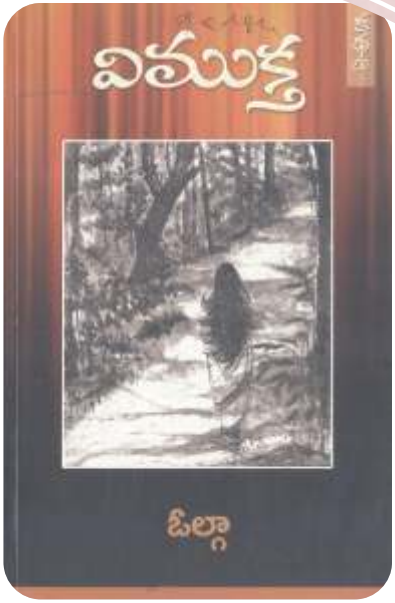


Volga is an eminent Telugu writer known for her sensitive portrayal of women characters. She has contributed immensely and has given a new direction to Telugu literature through her insightful writing and creative experiments.

Volga (original name Lalitha Kumari Popuri) was born in 1950 in Guntur, Andhra Pradesh. She holds an M.A. in Telugu Literature from the Andhra University. Apart from Telugu, she knows English and Hindi as well. She started her career as a Lecturer in VSR & NVR College, Tenali, and currently is the Executive Chairperson of Asmita Resource Centre for Women Secunderabad. She started her literary journey in the year 1969. She has ably balanced various genres such as poetry, short story, novel, plays and critiques. Her work has been translated into English, Hindi, Marathi, Kannada, Tamil, Odia, Malayalam and Nepali. She has written screenplays for Telugu feature films, short films and serials for Doordarshan. The various honours she has received include the Nandi Award, Rangavali Memorial Award, Ramineni Foundation Award, Dr. Vasireddy Seetha Devi Award, Suseela Narayana Reddy Award, Malati Chandur Literary Award among others. She has participated in Beijing International Women's Conference (1995). Some of her popular works are *Sahaja (1986), Svechcha (1987), Akasamlo Sagam (1990), Rajakiya Kathalu (1992)* and *Gurajada Adugujaada (2012)*.

The awarded book, *Vimukta,* is a collection of short stories which are reflections of women's agony in a patriarchal society. In the backdrop of Ramayana, Sita's character is central to all the stories. Sita and Shurpanakha are portrayed as good friends and while differing with Valmiki's Ramayan, she has put forth a most humanistic perspective. Volga's language and style is simple, lucid and effective. She is the pioneer of a new literary trend that champions the cause of women. As such, *Vimukta* is a major contribution to the genre of short stories in Telugu.

**With Vasantha Kannabiran,
Jameela Nishat (Poets and activists)
at the National Seminar on Law and Literature, 2012**

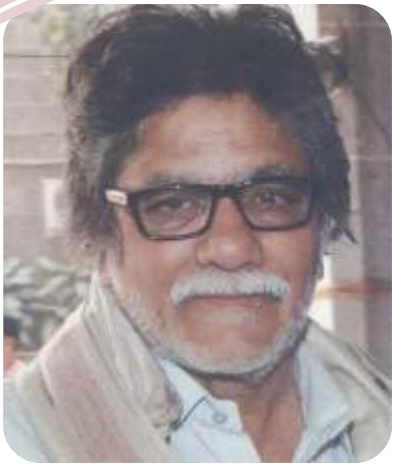

उर्दू में पुरस्कृत
**शमीम तारिक़**
(जन्म : 1952)

शमीम तारिक़ प्रतिष्ठित उर्दू आलोचक और पत्रकार हैं। ऐतिहासिक विषयों से लेकर विभिन्न कालखंड के साहित्य और समसामयिक विषयों पर आपका गंभीर वैचारिक लेखन पाठकों की पहली पसंद रहा है।

शमीम तारिक़ का जन्म 1952 में वाराणसी में हुआ। आप बनारस विश्वविद्यालय के वाणिज्य स्नातक हैं। आपको अंग्रेज़ी और हिंदी भाषाओं का भी ज्ञान है। आपने किशोरवय में ही लेखन प्रारंभ किया। आप एक पत्रकार के रूप में कार्यरत रहे तथा आपने *ब्लिट्ज़* (उर्दू साप्ताहिक) के सहायक संपादक, *हम अश्र* (उर्दू साप्ताहिक) के संपादक तथा *उर्दू टाइम्स* (दैनिक) के कार्यकारी संपादक के रूप में कार्य किया। आपने दैनिक समाचारपत्र *द इंक़िलाब* के लिए नियमित स्तंभ लेखन भी किया। आपकी प्रकाशित कृतियों में *शाह–ए–रग* (कविता–संग्रह), *शर्फ़–ए–मेहनत–व केफलत, टीपू सुल्तान की आख़िरी आरामगाह पर, रौशन लकीरें, ग़ालिब और हमारी तहरीक–ए–आज़ादी, ज़ोए शानासी, सूफ़िया की शायरी : बशीरत में श्रीकृष्ण, मिर्ज़ा मज़हर जान–ए–जाना* शामिल हैं। महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश तथा बिहार की उर्दू अकादमियों के पुरस्कारों सहित आपको अनेक पुरस्कार–सम्मानों से नवाज़ा गया है।

पुरस्कृत कृति *तसव्वुफ़ और भक्ति* (तनकीदी और तकाबुली मुतालेआ) शमीम तारिक़ कृत उर्दू आलोचना कृति है। यह कृति हमारे धर्मनिरपेक्ष लोकाचार एवं सामाजिक रचना संबंधी तत्त्वों से सरोकार रखती है तथा दर्शनशास्त्र के सूफ़ीवाद एवं वेदांती धाराओं को प्रतिपादित करती है। बौद्धिकता को वहन करते हुए भी इसकी भाषा अत्यधिक सरल है। यह कृति उर्दू में लिखित भारतीय समालोचना को एक महत्त्वपूर्ण योगदान मानी गई है।

अपनी पुस्तक के लोकार्पण के अवसर पर

Award in Urdu to
**Shamim Tariq**
(Born in 1952)

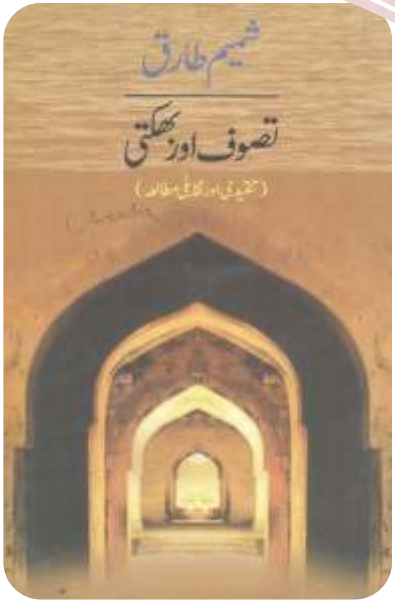


Shamim Tariq is a well-known Urdu journalist and critic whose body of work has enriched Urdu literature in India. His writing ranges from historical topics to literature of various eras as well as commentaries on various contemporary issues which have all been immensely liked by the readers.

He was born in 1952 in Varanasi. He graduated in Commerce from Benaras Hindu University. The languages known to him are Urdu, English and Hindi. He started writing in his teenage and the various Indian literary classics served as an inspiration for him to write. He started his career as a journalist and was the Assistant Editor of the weekly *Blitz* (Urdu) and Editor of weekly *Hum Asr* and also worked as an Executive Editor of *Urdu Times*. He was a regular columnist for the Urdu daily *The Inquilab*. His published work includes *Shah-e-Rag*, *Sharf-e-Mehnat-w-Kefalat, Tipu Sultan Ki Aakhri Aaramgah Per, Raushan Lakeerein, Ghalib aur Hamari Tehreek-e-Azadi, Zoe Shanasi, Mirza Mazhar Jaan-e-Jaana* and others. He has been awarded and honoured by the Urdu Academies of Maharashtra, U.P. and Bihar for his various books.

Awarded book, *Tasawwuf Aur Bhakti* (Tanqeedi Aur Taqabuli Mutalea), is a work of great value on a topic of immense importance. It deals with the essence of our secular ethos and social fabric. It deals with Sufism and Vedanta philosophies. The writer displays keen intellectual insights into the study of Tasawwuf and Bhakti, on their origins, impact on Urdu and Hindi literature along with their impact on the thought process of Indians. As such, *Tasawwuf Aur Bhakti* is an important contribution to the genre of literary criticism in Urdu.

**With eminent Urdu Writer Ali Sadar Jafri**

**श्री कुल सैकिया**
मकान सं. 1, ज़ोन II
पुलिस हाउसिंग कॉम्प्लेक्स
उलूबाड़ी, गुवाहाटी 781007 (असम)
मोबाइल : 09435049624
ई–मेल : kulasaika@yahoo.com

**श्री आलोक सरकार**
आनंद निकेतन, फ़्लैट नं. 4,
34 नंदी बागान,
रामलाल मार्केट के निकट
पत्रालय : हाल्तू, कोलकाता 700078
दूरभाष : 033–24845317
मोबाइल : 09836266950

**श्री ब्रजेन्द्र कुमार ब्रह्म**
बागनसाली, कोकराझार
वार्ड नं. 7
ज़िला – कोकराझार, बीटीएडी
असम 783370
मोबाइल : 09954089487

**श्री ध्यान सिंह**
ग्राम–पोस्ट : बातेहरा
तहसील एवं ज़िला – जम्मू
पिन 181 206
(जम्मू एवं कश्मीर)
मोबाइल : 09419259879
दूरभाष : 0191–2615378

**श्री साइरस मिस्त्री**
जॉनसन हाउस, प्रथम तल
श्रद्धानंद क्रॉस रोड
विलेपार्ले पूर्व
मुंबई 400 057 (महाराष्ट्र)
मो. : 09819326197
ई–मेल : cryushji@gmail.com

**श्री रसिक शाह**
फ़्लैट सं. 24/25
बी 6, खीरा नगर
एस.बी. रोड, सांताक्रूज (पश्चिम)
मुंबई 400054 (महाराष्ट्र)
मोबाइल : 09820517704
ई–मेल : sun155shah@gmail.com

**डॉ. रामदरश मिश्र**
आर 38, वाणी विहार
उत्तम नगर, नई दिल्ली 110059
मो. 09211389210
दूरभाष : 011–28563587

**डॉ. के. वि. तिरुमलेश**
501, पाँचवीं मंज़िल, सी ब्लॉक
उमा सिगनेचर टावर्स, 12–13–893,
हनुमान नगर, स्ट्रीट सं. 12, तारनाक
सिकंदराबाद 500 017 (आंध्र प्रदेश)
मोबाइल : 08897472245
दूरभाष : 040–60606061
ई–मेल : kvtirumalesh@rediffmail.com

**श्री बशीर भद्रवाही**
5, ग्रीन कॉलोनी, भद्रवाह
ज़िला : डोडा, जम्मू एवं कश्मीर 182222
मोबाइल : 09419155194
ई–मेल : bakhateeb009@gmail.com

**श्री उदय भेंब्रे**
'लक्ष्मी प्रभा'
लास पाल्मस हाउसिंग एस्टेट, घोगल
पोस्ट : फटोरदा, गोआ 403602
मोबाइल : 09822163223
दूरभाष : 2731661
ई–मेल : udaybhembre@gmail.com

**प्रो. मनमोहन झा**
11, टीचर्स क्वार्टर्स
किला घाट, पो. शुभंकरपुर
दरभंगा 846 001 (बिहार)
मोबाइल : 09534325219
दूरभाष : 06272230412
ई–मेल : jhamanmohan23@gmail.com

**श्रीमती के. आर. मीरा**
किलिक्कूडु
चेल्लियोप़क्कम रोड
कोट्टयम 686001(केरल)
मोबाइल : 09447060278
दूरभाष : 0481–2560278
ई–मेल : kr.meera@gmail.com

**श्री क्षेत्रि राजेन**
थोउबल नोङ्गाङखोङ लीरक
थोउबल 795 138 (मणिपुर)
मोबाइल : 09862722478
ई–मेल : kshetrirajen@gmail.com

**श्री अरुण खोपकर**
212 ए, कल्पतरु हैबिटेट
डॉ. एस.एस. राव रोड, परेल
मुंबई 400 012 (महाराष्ट्र)
मोबाइल : 09820077763
ई–मेल. : arunkhopkar@gmail.com

**श्री गुप्त प्रधान**
श्रीनिवास, ईस्ट प्वाइंट
डॉ. ज़ाकिर हुसैन मार्ग
दार्जीलिङ 734 101
(पश्चिम बंगाल)
मोबाइल : 08926787575

**श्री विभूति पट्टनायक**
3 एच, लेविस रोड
बी.जे.बी. नगर
भुवनेश्वर 751014 (ओड़िशा)
मोबाइल : 09337102165
दूरभाष : 0674–2430512

**डॉ. जसविन्दर सिंह**
प्रोफ़ेसर
पंजाबी विभाग
पंजाबी विश्वविद्यालय
पटियाला 147 002
(पंजाब)
मोबाइल : 09872860245
ई–मेल : jaswinder245@gmail.com

**श्री मधु आचार्य 'आशावादी'**
कलकतिया भवन,
आचार्य सुराना मोहल्ला
बीकानेर 334 005
(राजस्थान)
मोबाइल : 09672869385
दूरभाष : 0151–2520558
ई–मेल : ashawaadi@gmail.com

**डॉ. रामशंकर अवस्थी**
ग्राम–पोस्ट : औनाहन
ज़िला : कानपुर देहात
उत्तर प्रदेश 209 204
मोबाइल : 0941663536
09793509540
ई–मेल : sonishekhar799@gmail.com

**श्री रबिलाल टुडु**
ग्राम – नौराह
पोस्ट – बोहारकुली
जिला – बर्दवान
पं. बंगाल 712146
मोबाइल : 09932633649
08116846623

**श्रीमती माया राही**
ए 1/601, हैप्पी वैली
मानपदा, ठाणे (पश्चिम)
महाराष्ट्र 400 610
मोबाइल : 09833142427/09321693002
दूरभाष : 022–25890401

**श्री आ. माधवन**
'अभि निवास'
एम.आर.ए. 35, ओट्टुकल स्ट्रीट
कैथा मुक्कु, पेट्टाह,
तिरुवनंतपुरम 695 024 (केरल)
मोबाइल : 09946108350
दूरभाष : 0471–2572555
ई–मेल : yenmohanan@gmail.com

**श्रीमती वोल्गा**
302, विनायक कौस्तुभ अपार्टमेंट्स
गली सं. 11, ईस्ट मर्रेड पल्ली
सिकंदराबाद 500 026 (तेलंगाना)
दूरभाष : 040–27735891
मोबाइल : 09849038926
ई–मेल : lalitapopuri@gmail.com

**श्री शमीम तारिक़**
फ़्लैट सं. 27, चौथी मंज़िल
मर्ज़बान मैंशन, बायकुल्ला फ्रूट मार्केट
मुंबई 400 027 (महाराष्ट्र)
मोबाइल : 09224751077
दूरभाष : 022–23724449
ई–मेल : shamimtariq01@gmail.com

**Sri Kula Saikia**
House No. 1, Zone – II,
Police Housing Complex,
Ulubari, Guwahati 781 007
Mobile: 09435049624
Email: kulasaikia@yahoo.com

**Sri Alok Sarkar**
Flat No. 4, Anand Niketan,
34, Nandi Bagan, Haltu
Kolkata 700 078
Mob: 09836266950
Tel: 033 – 24845317

**Sri Brajendra Kr. Brahma**
Bagansali, Kokrajhar,
Ward No. 7,
Distt. Kokrajhar BTAD
Pin 783 370 (Assam).
Mobile: 09954089487

**Sri Dhian Singh,**
Vill. & P.O. Batehra,
Teh. & Distt. Jammu,
Jammu 181 206
Mobile : 09419259879
Tel.: 0191 – 2615378

**Sri Cyrus Mistry**
Littlewood,
Behind Vailanganni Church
Sreenivaspuram
Kodaikanal – 624 101
(Tamil Nadu)
Mobile: 09819326197
Email: cyrushji@gmail.com

**Sri Rasik Shah,**
B-6/24-25, Khira Nagar,
S V Road,
Santacruz (West),
Mumbai 400 054.
Mobile: 09820517704
Email: sunil55shah@gmail.com

**Dr. Ramdarash Mishra**
R-38, Vani Vihar,
Uttam Nagar,
New Delhi 110 059
Mob: 9211387210
Tel: 011 – 28563587

**Dr. K.V. Thirumalesh**
501, 5th floor, C Block,
Uma Signature Towers, 12-13-893,
Hanuman Nagar, Street No.12,
Tarnaka, Secunderabad 500 017
Mob: 08897472245
Tel: 040 – 27098705/60606061
Email: kvtirumalesh@rediffmail.com

**Sri Bashir Ahmad Khateeb**
**'Bashir Bhadarwahi'**
5, Green Colony, Bhadarwah,
Distt. Doda,
Pin 182 222 (J&K)
Mobile: 09419155194
Email: bakhateeb009@gmail.com

**Sri Uday L. Bhembre,**
'Laxmi Prabha'
Las Palmas Housing Estate,
Ghogal, Post Fatorda
Goa 403 602
Mobile: 09822163223
Tel: 0832 – 2736878/2731661
Email: udaybhembre@gmail.com

**Prof. Man Mohan Jha**
11, Teachers' Quarters,
Kila Ghat, P.O. Shubhankarpur,
Darbhanga 846 001.
Mobile: 09534325219
Tel: 06272 – 230412

**Ms. K.R. Meera**
Killikkoodu,
Chelliyozhukkam Road,
Kottayam 686 001
Mobile: 09447060278/9846011131
Tel: 0481 – 2560278
Email: kr.meera@gmail.com

**Sri Kshetri Rajen Singh**
Thoubal Nongangkhong Leirak
Thoubal – 795 138
Mobile: 0-9862722478
Email: kshetrirajen@gmail.com

**Sri Arun Khopkar**
212-A, Kalapataru Habitat,
Dr. S.S. Rao Road,
Parel, Mumbai 400 012.
Mob: 09820077763
Email: arunkhopkar@gmail.com

**Sri Gupta Pradhan**
Shreenivas, East Point,
Dr. Zakir Hussain Road,
Darjeeling 734101 (West Bengal).
Mobile: 08926787575

**Dr. Bibhuti Pattanaik**
3-H, Lewis Road, BJB Nagar,
Bhubaneswar 751 014.
Tel: 0674 – 2430512
Mobile: 09337102165

**Dr. Jaswinder Singh**
245, Charan Bagh,
Patiala 147 002.
Mobile: 09872860245
Email: jaswinder245@gmail.com

**Sri Madhu Acharya 'Ashawadi'**
Kalkatiya Bhavan
Acharya Surana Mohalla
Bikaner 334 005 (Rajasthan)
Mobile: 09672869385
Tel: 0151 – 2520558
Email: ashawaadi@gmail.com

**Dr. Ram Shanker Awasthi**
Vill. & P.O. Aunahan,
Distt. Kanpur Dehat, Pin:209 204
Mobile: 09793509540
09935241694
Tel: 09415 – 663536
Email: sonishekhar799@gmail.com

**Sri Rabi Lal Tudu**
At. Noarah, P.O. Boharkuli,
Distt. Burdwan – 712 146
(West Bengal).
Mobile: 09932633649

**Smt. Maya Rahi**
A-1/601, Happy Valley,
Near Tikunjini Wadi,
Chitalsar, Manpada,
Thane (West) – 400 610
Mobile: 09321693002
Tel: 022 – 25890401

**Sri A. Madhavan**
MRA – 35, 'Abhi Niwas',
Ottukal Street,
Kaitha Mukku, Pettah,
Thiruvananthapuram 695 024
Mobile: 09946108350
Tel: 0471 – 2572555
Email: yenmohanan@gmail.com

**Ms. Volga**
302,
Vinayaka Koustubha Apartments,
Street 11, East Marredpally
Secunderabad – 500 026
Mobile: 09849038926;
09849760494
Tel: 040 – 27735891
E-mail: lalitapopuri@gmail.com

**Shamim Tariq**
Flat No. 27, 4th Floor,
Mazaban Mansion,
Byculla Fruit Market,
Mumbai 400027.
Mob: 9229751077
Tel. (022) 23724449
Email:shamimtariq01@gmail.com

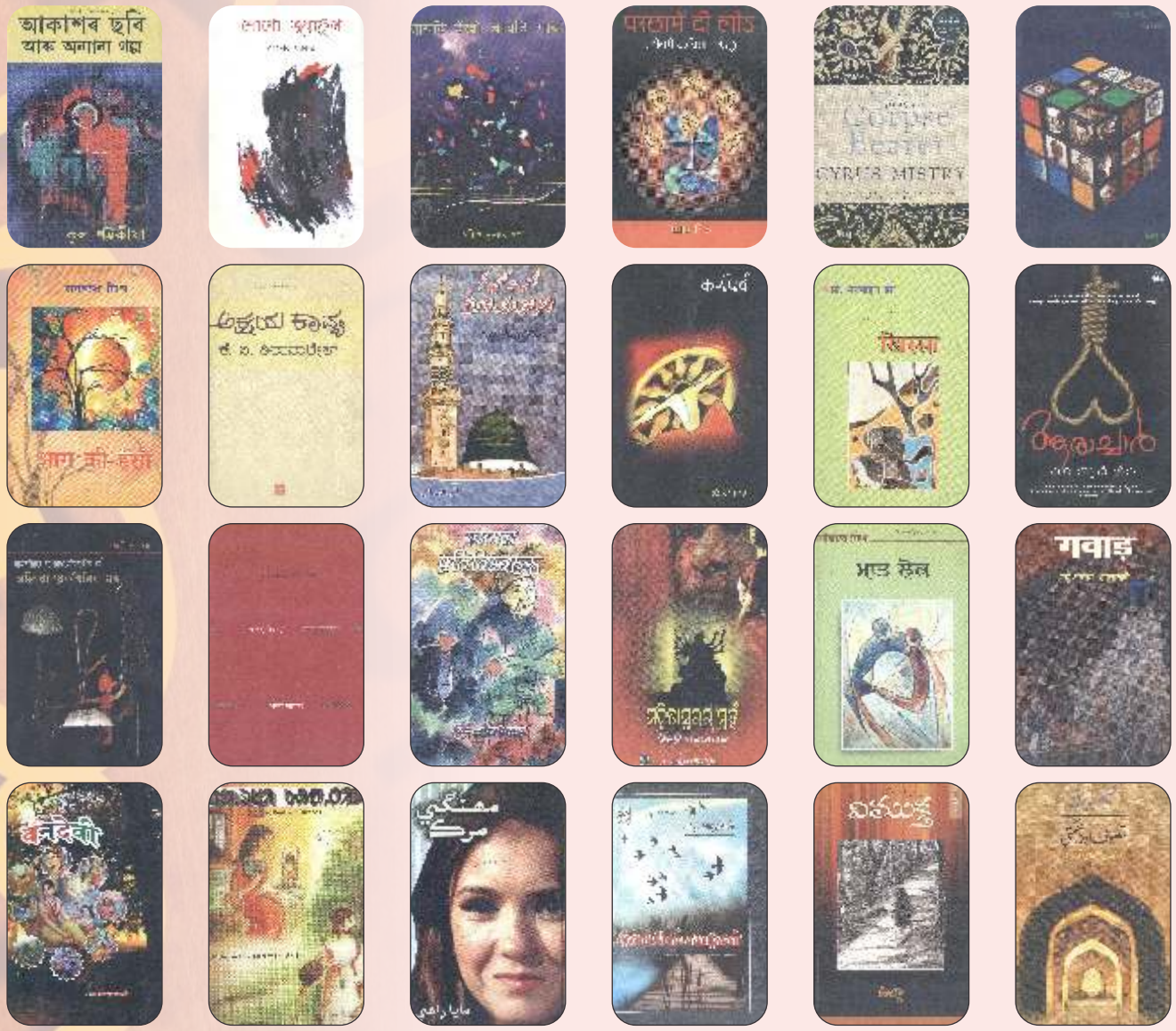


साहित्य अकादेमी
रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग,
नई दिल्ली 110 001
दूरभाष : 011-23386626/27/28
फ़ैक्स : 091-11-23382428
ई-मेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in
वेबसाइट : www.sahitya-akademi.gov.in

**SAHITYA AKADEMI**
Rabindra Bhawan, 35 Ferozeshah Road,
New Delhi - 110001
Phone: +91 11 23386626-28
Fax: +91 11 23382428
Email: secretary@sahitya-akademi.gov.in
Website : www.sahitya-akademi.gov.in